NEKI KI DA'WAT KE FAZAIL (HINDI)

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के फ़ज़ाइल व मसाइल
पर मुश्तमिल अहम तहरीर

الْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ

तर्जमा बनाम

नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल

मुअल्लिफ़ : फ़ज़ीलतुश्शैख़ अस्अ़द मुहम्मद सईद साग़रिजी مُدَّظِلُّهُ العالی

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

SC1286

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = ـَ	ी = ئ	ू = ؤ	ा = آ

✍ -: राबित़ा :- ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मनअ़ करने के फ़ज़ाइल व

मसाइल पर मुश्तमिल अहम तहरीर

الْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ

तर्जमा बनाम

नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल

–: मुअल्लिफ़ :–

फ़ज़ीलतुश्शैख़ अस्अ़द मुह़म्मद सईद साग़रिजी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

–: मुर्तजिमीन :–

मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

–: पेशकश :–

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

–: नाशिर :–

मक्तबतुल मदीना, देहली-6

www.dawateislami.net

नाम किताब : اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَر

तर्जमा बनाम : **नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल**

मोअल्लिफ़ : **फ़ज़ीलतुश्शैख़** अस्अ़द मुह़म्मद सईद सागरिजी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي

मुतर्जिमीन : **मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)**

सिने त़बाअ़त : जुल ह़िज्जतिल ह़राम, सि. 1436 हि.

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 24 रबीउ़ल अव्वल, 1434 हि. **ह़वाला :** 158

الحمد لله رب العلمين والصلوٰة والسلام علىٰ سيد المرسلين وعلى اله واصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر के तर्जमे

"नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
09-03-2009

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मज़मून	सफ़हा	मज़मून	सफ़हा
फ़ेहरिस्त	1	ख़ुलासए कलाम	48
सनदे इजाज़त	2	हदीसे पाक की तशरीह	50
इस किताब को पढ़ने की "निय्यतें"	3	नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के आदाब	51
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रूफ़	4	सब्रो तहम्मुल की आ'ला मिसाल	55
पहले इसे पढ़ लीजिये	6	नर्म मिज़ाजी के मुतअ़ल्लिक़ हिकायत	56
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر की फ़ज़ीलत	14	बुराई से मन्अ़ करने का बेहतरीन अन्दाज़	57
नेकी की दा'वत की लोगों को हाजत	16	बुराइयों की अक़्साम	58
नेकी की दा'वत देने का फ़ाइदा	20	मसाजिद में होने वाली बुराइयां	59
नेकी की दा'वत न देने का अन्जाम	20	सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة का इ़ल्मी मक़ाम	61
सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ुरआन फ़हमी	24	बाज़ारों में होने वाली बुराइयां	65
मा'रूफ़ का मफ़्हूम	25	रास्तों में होने वाली बुराइयां	66
मुन्कर की ता'रीफ़	26	चबूतरा मिस्मार कर दिया	67
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر का हुक्म	26	शादी व ख़ुशी के मौक़अ़ पर होने वाली बुराइयां	68
अ़ज़ीम शिआ़र	29	शत़रन्ज के जवाज़ की शराइत़	71
नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले की शराइत़	30	इसराफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें	72
اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر की शराइत़	37	शाने नुज़ूल	73
ऐ़ब तलाश न करो	40	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم काफ़ी हैं	73
ख़लीफ़ए सानी की अनोखी हिकायत	40	आ़म बुराइयां	74
बुराई ख़त्म करने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े	43	हुक्कामे वक़्त को वा'ज़ो नसीह़त	76
मदनी फूल	44	मफ़्हूमे हदीस	77
ज़रूरी वज़ाह़त	47	सय्यिदुना अबू मूसा और सय्यिदुना ज़ब्बह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का वाक़िआ़	78
हदीसे पाक की तशरीह	47	इमाम औज़ाई عَلَيْهِ الرَّحْمَة और ख़लीफ़ा मन्सूर का वाक़िआ़	83
एक इश्काल का जवाब	47	माख़ज़ो मराजेअ़	91

www.dawateislami.net

सनदे इजाज़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 4 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1429 हिजरी को आ़लमी मदनी मर्कज़ **''फ़ैज़ाने मदीना''** बाबुल मदीना कराची में क़ाइम **''दा'वते इस्लामी''** के इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती शो'बे **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** से मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी **''मुल्के शाम''** के सफ़र पर तशरीफ़ ले गए और वहां के उ़लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया। उन्ही उ़लमा व मशाइख़ में एक जय्यद आ़लिमे दीन फ़ज़ीलतुश्शैख़ **अस्अ़द मुह़म्मद सईद साग़रिजी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی भी हैं। जिन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के शो'बे **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को अपनी मुबारक कुतुब के उर्दू तर्जमे की **''सनदे इजाज़त''** अ़ता फ़रमाई। जिस का अ़क्स और तर्जमा दर्जे ज़ैल है :

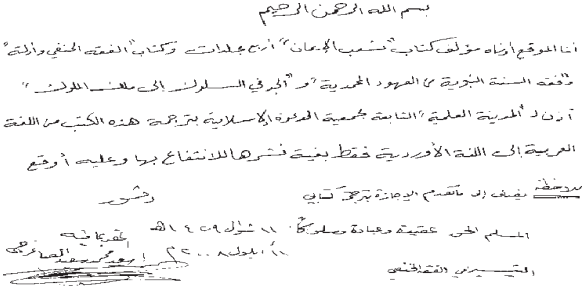

بسم الله الرحمن الرحيم
انا الموقع ادناه مؤلف كتاب "شعب الإيمان" أربع مجلدات وكتاب "الفقه الحنفي وأدلته" و"فقه السنة النبوية في العهود المحمدية" و"الجدفي السلوك إلى ملك الملوك" آذن لـ"المدينة العلمية" التابعة لجمعية الدعوة الإسلامية بترجمة هذه الكتب من اللغة العربية إلى اللغة الأوردية فقط بغية نشرها للانتفاع بها وعليه أوقع
يضاف إلى ما تقدم الإجازة بترجمة كتابي "المسلم الحق عقيدة وعبادة وسلوكا" و"التيسير في الفقه الحنفي"
وشكرا
١١ شوال ١٤٢٩هـ
١١ أيلول ٢٠٠٨م
أسعد محمد سعيد الصاغرجي

(तर्जमा :) अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला

''येह सनदे इजाज़त तह़रीर करने वाला, मैं मुअल्लिफ़े कुतुबे हाज़ा (1)....شُعَبُ الْإِيْمَان(4 جلدیں) (2)....اَلْفِقْهُ الْحَنَفِي وَاَدِلَّته (3)....فِقْهُ السُّنَّةِ النَّبَوِيَّةِ فِي الْعُهُوْدِ الْمُحَمَّدِيَّة (4)...اَلْجَدُفِي السُّلُوْک اِلٰی مَلِکِ الْمُلُوْک, दा'वते इस्लामी के शो'बे **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को ब ख़ुशी इन किताबों के अ़रबी से फ़क़त़ उर्दू तर्जमे की इजाज़त देता हूं। इस ख़्वाहिश के साथ कि (दीनी) फ़वाइद के ह़ुसूल के लिये इन की नश्रो इशाअ़त की जाए और मैं इस पर दस्तख़त़ भी करता हूं।''

नोट : मज़्कूरा इजाज़त इन दो कुतुब के लिये भी है :

(۱)اَلتَّيْسِيْر فِي الْفِقْهِ الْحَنَفِي (۲)اَلْمُسْلِمُ الْحَق عَقِيْدَةً وَّعِبَادَةً وَّسُلُوْكًا

अस्अ़द मुह़म्मद सईद साग़रिजी

11 शव्वाल 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 11 अक्तूबर 2008 ईसवी

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"फ़ैज़े मजलिसे शूरा" के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। ﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿6﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿7﴾ जहां जहां 'अल्लाह' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿8﴾ जहां जहां 'सरकार' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴿9﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴿10﴾ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحديث: ۱۷۳۱، ج۲، ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴿11﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** *रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **'दा'वते इस्लामी' नेकी की दा'वत**, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **'अल मदीनतुल इल्मिय्या'** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

'अल मदीनतुल इल्मिय्या' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **'दा'वते इस्लामी'** की तमाम मजालिस ब शुमूल **'अल मदीनतुल इल्मिय्या'** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का हासिल हो जाना बहुत बड़ी कामयाबी है कि जिस शख़्स को उस की रिज़ा हासिल हो जाती है वोह दुन्या व आख़िरत दोनों में कामयाब हो जाता है। लिहाज़ा हमें भी ऐसे काम करने चाहियें जो रिज़ाए इलाही के हुसूल का ज़रीआ़ हैं। इन्हीं कामों में से एक **नेकी की दा'वत** देना और **बुराई से मन्अ़** करना है। चुनान्चे,

अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (۱۰۴) (پ ٤، اٰل عمران: ١٠٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में एक गुरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी (बात) से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।*

यक़ीनन इस बात में कोई शक नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिरे मुत़लक़ है। वोह फ़रमाता है :

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (۲۰) (پ ١، البقرۃ: ٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।*

वोह अगर चाहे तो मख़्लूक़ के बिग़ैर भी बिगड़े हुवे इन्सानों को राहे रास्त पर ला सकता है। लेकिन उस को येही मह़बूब है कि اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر के अहम फ़रीज़े को उस के बन्दे बजा लाएं और उस का क़ुर्बे ख़ास ह़ासिल करें। बेशक येह बात तस्लीम शुदा है कि येह अहम काम फ़ज़ीलत का बाइस है। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

كُنْتُمْ خَیْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ (پ ٤، اٰل عمران: ١١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों से जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो।*

www.dawateislami.net

लेकिन येह भी एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि इस को तर्क करने पर वबाले अ़ज़ीम है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿۷۸﴾ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۹﴾ (پ٦، المائدة:٧٨-٧٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस आयत के ज़िम्न में इरशाद फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि बुराई से रोकना, अच्छाई का हुक्म करना वाजिब है। तब्लीग़ बन्द होने पर अ़ज़ाबे इलाही आने का अन्देशा है।"(1)

इन आयाते कुरआनिय्या की रोशनी में **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने की अहम्मिय्यत और फ़ज़ीलत मा'लूम हुई और इस से पहलू तही करने के नुक़्सानात भी वाज़ेह़ हुवे और येह बात हर मुसलमान ब ख़ूबी जानता है कि हमारे मक्की मदनी आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आख़िरी नबी हैं। लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द इस अ़ज़ीमुश्शान काम की ज़िम्मेदारी उम्मते मुह़म्मदिय्या पर है। पस हर मुसलमान पर अपनी कुव्वत व कुदरत के मुत़ाबिक़ **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना लाज़िम है और इस के लिये इस के आदाब व अह़काम से आगाही ज़रूरी है जो आप इस किताब में पढ़ेंगे। लगे हाथों यहां शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़रामीन की रोशनी में इनफ़िरादी व इजतिमाई اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر और मुबल्लिग़ीन के 26 आदाब बयान किये जाते हैं :

1 .....नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन, सूरए माइदह तह़तुल आयाह : 79.

www.dawateislami.net

(1)......मुबल्लिग़ बा अ़मल हो। क्यूंकि बा अ़मल की बात जल्द असर करती है। (2)......उ़लमाए अहले सुन्नत की किताबों का मुत़ालआ़ करते रहें। (3)......जब किसी को **नेकी की दा'वत** दें (या'नी नसीहत करें) तो उस के साथ मह़ब्बत से पेश आएं और गुनाह करते देखें तो निहायत ही नर्मी के साथ उसे मन्अ़ करें और बड़ी मह़ब्बत के साथ उसे समझाएं। (4)......बेजा जज़्बाती न बनें। अगर झिड़क कर समझाने की कोशिश करेंगे तो उल्टा ज़िद पैदा हो जाने का अन्देशा है। लोग आप से नफ़रत करने लगेंगे। किसी को डांट कर समझाने की मिसाल यूं समझें कि गोया जिस बरतन में कुछ डालना था उस में पहले ही से आप ने छेद कर डाला। (5)......अगर कोई ग़लती कर दे तो उसे सब के सामने हरगिज़ न टोकें। इस से आप की बात बे असर हो जाएगी और उस की दिल आज़ारी हो जाने का भी क़वी इमकान है। लिहाज़ा मौक़अ़ पा कर समझाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ''जिस ने अपने भाई को सब के सामने नसीह़त की उस ने उसे ज़लील किया और जिस ने तन्हाई में नसीह़त की उस ने उसे मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) किया।''[1] या'नी ज़ाहिर है उसे अकेले में मह़ब्बत के साथ समझाएंगे तो क़वी उम्मीद है कि वोह अपनी ग़लती की इस्लाह़ कर लेगा और यूं वोह इस्लाह़ के साथ मुज़य्यन हो जाएगा। (6)......वालिदैन अपनी अवलाद को, शोहर अपनी बीवी को और उस्ताज़ अपने शागिर्द को ज़रूरतन सख़्ती से भी समझाएं तो ह़रज नहीं। (7)......कोई बुराई में मसरूफ़ है, गुनाह कर रहा है और हमारा गुमाने ग़ालिब है कि अगर हम समझाएंगे तो बुराई से बाज़ आ जाएगा। ऐसी सूरत में اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر वाजिब है। अगर हम ने येह न किया तो गुनाहगार होंगे।''[2] (8)......اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف करने वाले मुबल्लिग़ के पास इ़ल्म होना ज़रूरी है वरना किस त़रह़ समझाएगा? इस

1......تنبیہ الغافلین،باب الامربالمعروف والنھی عن المنکر،ص ۴۹.

2......बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 259

www.dawateislami.net

लिये इस्लामी किताबों का मुत़ालआ़ करना ज़रूरी है। (अ़वाम मुबल्लिग़ीन) जितना किताब में पढ़ें या उ़लमाए ह़क़्क़ा से सुनें वोही बयान करें। अपनी त़रफ़ से आयात व अह़ादीस की तफ़्सीर व तशरीह़ न करें। (9).....मुबल्लिग़ की निय्यत सिर्फ़ रिज़ाए इलाही का हुसूल और इस्लाम की सर बुलन्दी हो। (10).....मुबल्लिग़ का बा अख़्लाक़ और मिलन सार और बा किरदार होना बे ह़द ज़रूरी है। (11).....मुबल्लिग़ साबिर और बुर्दबार भी हो। हो सकता है जिस को समझाया जा रहा है वोह बिफर जाए या गाली वग़ैरा बक दे। मुबल्लिग़ के लिये येह मौक़अ़ इम्तिह़ान का होता है। अगर दामने सब्र हाथ से जाता रहा और आप ने भी ख़ुदा न ख़्वास्ता गुस्से का मुज़ाहरा किया तो आप बाज़ी हार गए। (12).....मुबल्लिग़ के मिज़ाज में बेजा गुस्सा हो ही ना, नर्मी ही नर्मी होनी चाहिये। (13).....अ़वाम (या'नी जो आ़लिम न हो) हरगिज़ मश्हूरो मा'रूफ़ उ़लमाए ह़क़्क़ा और मुफ़्तियाने किराम की टोह में न रहें। उन की ग़लतियां न निकालें। उन को اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر न करें कि येह बे अदबी है। हो सकता है कि वोह ह़ज़रात किसी ख़ास मस्लेह़त के तह़्त ऐसा कर रहे हों और अ़वाम की नज़र वहां तक न पहुंचे।[1] (14).....किसी को गुनाह करता देखें और مَعَاذَاللّٰه ख़ुद भी वोही गुनाह करते हैं फिर भी उसे गुनाह से मन्अ़ करें क्यूंकि आप के ज़िम्मे तो दो चीज़ें वाजिब हैं : (1) बुरे काम से बचना और (2) दूसरे को बुरे काम से मन्अ़ करना। अगर एक वाजिब के तारिक हैं तो दूसरे के तारिक क्यूं बनें ?[2] सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْ اٰیَة या'नी : पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो।"[3] (15).....जो कुछ दूसरों को कहें सब से पहले अपने आप को उस का मुख़ात़ब बनाएं। (16).....ऐ़श कोशियों से इजतिनाब करते रहें और अपनी ज़िन्दगी सादगी के साथ गुज़ारें।

1 .....الفتاوى الهندية، كتاب الكراهة، الباب السابع عشر في الغناء.....الخ، ج٥، ص٣٥٣.

2 .....الفتاوى الهندية، كتاب الكراهة، الباب السابع عشر في الغناء.....الخ، ج٥، ص٣٥٣.

3 .....مشكوٰة المصابيح، كتاب العلم، الحديث: ١٩٨، ج١، ص٥٩.

www.dawateislami.net

(17).....ख़ुशी, ग़मी और बीमारी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर लोगों के साथ हमदर्दाना रविय्या इख़्तियार करें। (18).....लोगों को उन की नफ़्सियात के मुताबिक़ महब्बत भरे लहजे में समझाएं। (19).....दक़ीक़ मज़ामीन और पेचीदा मसाइल न छेड़ें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (پ۱۴، النحل:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से। (और) मनक़ूल है : كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ "या'नी : लोगो से उन की अ़क़्लों के मुताबिक़ कलाम करो।" (और) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ बातें ऐसी भी सुनी हैं कि अगर तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर दूं तो तुम मेरा गला काट दो।"[1] (20).....**नेकी की दा'वत** देने की राह में पेश आने वाली मुश्किलात, तकालीफ़ और आज़माइशों का ख़न्दा पेशानी से इस्तिक़बाल करें और सब्र व इस्तिक़ामत का पहाड़ बन जाएं।

(चुनान्चे) ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस पर मुसीबत आए और सब्र करना दुश्वार मा'लूम हो वोह मेरे मसाइब को याद कर ले।"[2] ज़ाहिर है जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का राहे ख़ुदा में तकालीफ़ उठाना याद करेंगे तो हमें अपनी तकालीफ़ इस के आगे हेच नज़र आएंगी। (21).....इह्याए सुन्नत की ख़ातिर हर क़िस्म की क़ुरबानी देने के लिये अपने आप को तय्यार रखें। (22).....सुन्नतें सीखने और सिखाने की पाकीज़ा आरज़ू और इस राह में इख़्लास व ईसार का जज़्बा अपने अन्दर बेदार रखें। (23).....आ़मी मुबल्लिग़ीन को चाहिये कि वोह बह़्सो मुबाह़सा (या'नी जदल व मुनाज़रा) में न पड़ें बल्कि ऐसे मौक़अ़ पर उ़लमाए ह़क़्क़ा की

1 .....صحیح البخاری، کتاب العلم، باب حفظ العلم، الحدیث:۱۲۰، ص۱۳.

2 .....تنبیہ الغافلین، باب الصبر علی البلاء والشدۃ، ص۱۳۸.

www.dawateislami.net

त़रफ़ रुजूअ़ करें कि येह इन्हीं ह़ज़रात का शो'बा है । अलबत्ता ! अपने अ़क़ाइदो आ'माल में पुख़्ता ज़रूर रहें । (24).....अपने बयान में हमेशा इस अम्र का एहतिमाम रखें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रह़मत से उम्मीद की कैफ़िय्यत भी त़ारी रहे और क़ह्रो ग़ज़ब की भी । (25).....अपने बाल बच्चों की इस्लाह़ भी करते रहें । (चुनान्चे) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا (پ۲۸، التحریم:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ । (26)....वालिदैन या बड़े बहन भाई अगर ख़त़ा के मुर्तकिब हों तो हरगिज़ उन पर शिद्दत न करें, निहायत ही आ़जिज़ी और नर्मी के साथ इस्लाह़ की दरख़्वास्त करें । उन से उलझा न करें ।

''शुअ़बुल ईमान लिस्सागि़रिजी'' मुल्के शाम के जय्यद आ़लिमे दीन शैख़ अस्अ़द मुह़म्मद सईद सागि़रिजी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की मुबारक तस्नीफ़ है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के हुक्म पर **शो'बए तराजिमे कुतुब** से इस के एक बाब "اَلزُّهْد وَقِصَرُ الْاَمَل" का उर्दू तर्जमा ब नाम **''दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी''** शाएअ़ हो कर अ़वाम व ख़वास में ख़ूब फ़ैज़ पहुंचा रहा है । पेशे नज़र किताब भी इसी मुबारक तस्नीफ़ के एक और बाब اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر का उर्दू तर्जमा है जो ब नाम **''नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल''** आप के हाथों में है । इस में **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने के फ़ज़ाइलो फ़वाइद और आदाबो अह़काम बयान किये गए हैं । इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है ।

www.dawateislami.net

तर्जमे के लिये दारुल कलिमत्तय्यिब दिमश्क़ बैरूत **का नुस्ख़ा (मत़बूआ़ 1422 हिजरी / 2002 ईसवी) इस्ति'माल किया गया है और तर्जमा करते हुवे इन उमूर का ख़ास ख़याल रखा गया है :**

......सलीस और बा मुहावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

......आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से लिया गया है।

......आयाते मुबारका के ह़वाले का भी एहतिमाम किया गया है और ह़त्तल मक्दूर अहादीसे त़य्यिबा व वाक़िआ़त की तख़रीज भी की गई है।

......बा'ज़ मक़ामात पर ह़वाशी मअ़ तख़रीज का इल्तिज़ाम किया गया है।

......मौक़अ़ की मुनासबत से जगह ब जगह उ़नवानात क़ाइम किये गए हैं।

......नीज़ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (......) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

......अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। (اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۳۳﴾ (پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो* **अल्लाह** *की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसलमान हूं।*

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस उम्मत को सब से पहले **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत की त़रफ़ बुलाने, कुफ़्रो शिर्क और बिदअ़त को मिटाने का आग़ाज़ फ़रमाया। पस नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की पैरवी करने वालों का त़रीक़ा और मोमिनीन व मुनाफ़िक़ीन के दरमियान फ़र्क़ करने वाला (काम) है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने पाक कलाम कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ نَسُوا اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ط اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۶۷﴾ پ۱۰، التوبۃ:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औ़रतें एक थैली के चट्टे बट्टे हैं बुराई का हुक्म दें और भलाई से मन्अ़ करें और अपनी मुट्ठी बन्द रखें वोह* **अल्लाह** *को छोड़ बैठे तो* **अल्लाह** *ने उन्हें छोड़ दिया बेशक मुनाफ़िक़ वोही पक्के बे हुक्म हैं।*

और इरशाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۷۱﴾ (پ۱۰، التوبۃ: ۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं भलाई का हुक्म दें और बुराई से मन्अ़ करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और* **अल्लाह** *व रसूल का हुक्म मानें येह हैं जिन पर अ़न क़रीब* **अल्लाह** *रहूम करेगा बेशक* **अल्लाह** *ग़ालिब हिक्मत वाला है।*

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر की फ़ज़ीलत

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के बे शुमार फ़ज़ाइलो फ़वाइद हैं (जिन में से चन्द बयान किये जाते हैं) :

﴿1﴾.....इस से दुन्या का निज़ाम क़ाइम और दुरुस्त रहता है क्यूंकि लोगों को फ़क़त् **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये पैदा किया गया है। जैसा कि क़ुरआने पाक में इरशाद होता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (या'नी इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।*

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों से वा'दा फ़रमाया है कि जब वोह उस की इ़बादत करेंगे तो ज़मीन में उन्हें अपना नाइब बना लेगा और उन तमाम चीज़ों से फ़ाइदा उठाने का इख़्तियार देगा जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये पैदा फ़रमाया है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाया :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۶۵﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर किताब वाले ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो ज़रूर हम उन के गुनाह उतार देते और ज़रूर उन्हें चैन के बाग़ों में ले जाते। और अगर वोह क़ाइम रखते तौरेत*

www.dawateislami.net

لَاَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ (پ٦، المائدہ:٦٥، ٦٦)

और इन्जील और जो कुछ उन की तरफ़ उन के रब की तरफ़ से उतरा तो उन्हें रिज़्क़ मिलता ऊपर से और उन के पाउं के नीचे से उन में कोई गुरौह अगर ए'तिदाल पर है और उन में अक्सर बहुत ही बुरे काम कर रहे हैं।

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ (پ٩، الاعراف:٩٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्हों ने तो झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया।

﴿2﴾.....**नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने (की बरकत) से ज़मीन और अहले ज़मीन से मुसीबत दूर होती है। इस काम को न करने की वज्ह से पहली उम्मतों को अ़ज़ाब दिया गया। जब अ़ज़ाब आया तो अ़ज़ाब ने तबाहो बरबाद कर के उन्हें जड़ से उखेड़ दिया। **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने की वज्ह से बलाएं दूर होती हैं और ज़मीन वालों से अ़ज़ाब उठ जाता है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٥١﴾ (پ٢، البقرة:٢٥١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए मगर **अल्लाह** सारे जहान पर फ़ज़्ल करने वाला है।

﴿3﴾.....**नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने से लोगों पर हुज्जत क़ाइम हो जाती है लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उन का कोई उ़ज़्र न रहेगा।

www.dawateislami.net

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ (پ ٦، النسآء: ١٦٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल ख़ुश ख़बरी देते और डर सुनाते कि रसूलों के बा'द **अल्लाह** के यहां लोगों को कोई उ़ज़्र न रहे ।*

﴾4﴿......ऐसे शख़्स को वा'ज़ो नसीहत की जाए जो इसे क़बूल करना चाहता हो । चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ۹ (پ ٣٠، الاعلى: ٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो तुम नसीह़त फ़रमाओ अगर नसीह़त काम दे ।*

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۵۵ (پ ٢٧، الذّٰريٰت: ٥٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है ।*

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के सबब दुन्या का निज़ाम दुरुस्त रहता और तर्क करने की वज्ह से फ़साद बरपा हो जाता है । लोग उस वक़्त तक भलाई पर रहेंगे जब तक नेकी पर कारबन्द रहेंगे और इस की दा'वत देते रहेंगे, बुराई से रुके रहेंगे और इस से मन्अ़ करते रहेंगे ।

नेकी की दा'वत की लोगों को ह़ाजत

चूंकि शैत़ान को इब्ने आदम पर मुसल्लत़ किया गया है इस लिये वोह इस से जुदा नहीं होता जैसा कि ह़दीसे पाक में है, सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम में ऐसा कोई नहीं जिस पर एक साथी जिन्न (या'नी शैत़ान) मुसल्लत़ न हो ।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी ?" इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"मुझ पर भी, मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उस पर मदद दी और वोह मुसलमान हो गया। अब वोह मुझे भलाई ही का मश्वरा देता है।"(1)

येह बात वाज़ेह है कि शैत़ान इन्सान को वस्वसे में मुब्तला करता और उसे नेकी के काम से रोकता है पस इन्सान हमेशा वा'ज़ो नसीह़त का मोह़ताज है और ज़मानए नबवी सब ज़मानों से आ'ला है। जैसे जैसे हमारे और ज़मानए नबवी के दरमियान फ़ासिला बढ़ता गया हमें اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف और نَهْیٌ عَنِ الْمُنْکَر की ज़रूरत ज़ियादा होती गई। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़रमान दलील है कि "हर आने वाले ज़माने से जाने वाला ज़माना बेहतर है।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारा ज़माना पिछले ज़मानों से ख़ुशह़ाल और सस्ता है।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "फ़ुक़हाए किराम और क़ारिये क़ुरआन किस ज़माने में ज़ियादा हैं? और कौन सा ज़माना, ज़मानए नबवी से क़रीब है?" अ़र्ज़ की : "जो ज़माना गुज़र गया।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "येही तो मेरी मुराद थी।"

इस फ़रमान कि "हर आने वाले ज़माने से जाने वाला ज़माना बेहतर है" के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق फ़रमाते हैं : "मैं इसे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने से समझता हूं।"

पस ज़माने की दुरुस्ती व भलाई अहले ज़माना की दुरुस्ती में है, और ज़माने की ख़राबी और बुराई इस के अहल की ख़राबी व बुराई और इन में भलाई की कमी की वज्ह से है और सब ज़मानों से बेहतर ज़माना, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़माना है और बा'द वाले

1 .....صحیح المسلم، کتاب صفات المنافقین و احکامھم، باب تحریش الشیطان و بعثہ.....الخ، الحدیث:۷۱۰۸، ص۱۱۶۸.

www.dawateislami.net

ज़माने में भलाई कम है जैसा कि ह़दीसे पाक में है। चुनान्चे, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेहतरीन लोग मेरे ज़माने वाले हैं। फिर वोह लोग जो इन से मिले हुवे हैं। फिर वोह जो इन से मिले हुवे हैं।"(1)

इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़माना, बा'द वाले ज़माने से बेहतर है और ऐसे ही हमेशा होता रहेगा (या'नी ख़ैर में कमी आती रहेगी) इस लिये कि ज़माने की ता'रीफ़ इस ख़ुशह़ाली व कसरते फ़राख़ी की वज्ह से नहीं बल्कि अहले ज़माना की वज्ह से की जाती है। क्यूंकि कभी कभार ख़ुशह़ाल ज़माने में बुराई ज़ियादा होती है तो वोह बेहतरीन ज़माना नहीं कहलाता और कभी कभार क़ह़त ज़दा ज़माने में बुराइयां और गुनाह कम होते हैं तो वोह बेहतरीन ज़माना कहलाता है और हम जिस ज़माने में हैं इस में भलाई कम और बुराई ज़ियादा है जैसा कि ह़दीसे पाक में है।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म को यूं नहीं उठाएगा कि बन्दों (के सीनों) से निकाल लेगा बल्कि उ़लमा की मौत के साथ इ़ल्म को उठा लेगा। जब कोई आ़लिम बाक़ी न रहेगा तो लोग जाहिलों को अपना पेश्वा बना लेंगे। उन से सुवालात किये जाएंगे तो वोह बिग़ैर इ़ल्म के फ़तवा देंगे। ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।"(2)

बुराइयों की कसरत वाले ज़माने में लोगों को ऐसे शख़्स की ह़ाजत है जो उन को आगाह करे। उन की ख़ैर ख़्वाही करे। उन्हें रह़मते इलाही की उम्मीद दिलाए और ग़ज़बे इलाही से डराए और इस

1 .....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضائل اصحاب النبی.....الخ، الحدیث: ۳۶۵۱، ص۲۹۷.

2 .....صحیح البخاری، کتاب العلم، باب کیف یقبض العلم، الحدیث: ۱۰۰، ص۱۱.

www.dawateislami.net

(या'नी भलाई की त़रफ़ बुलाने वाले) अ़मल पर क़ाइम रहने वाले लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बिशारत के साथ कामयाबी ह़ासिल करने वाले हैं। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

وَ لۡتَكُنۡ مِّنۡكُمۡ اُمَّةٌ يَّدۡعُوۡنَ اِلَى الۡخَيۡرِ وَيَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡكَرِ ‌ؕ وَاُولٰٓـئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ۝۱۰۴ (پ ۴، اٰلِ عمران: ۱۰۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में एक गुरोह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी (बात) से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।*

जब खुदाए जब्बार व क़ह्हार جَلَّ جَلَالُہٗ का अ़ज़ाब नाज़िल होगा तो **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले इस से मह़फ़ूज़ रहेंगे।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَلَمَّا نَسُوۡا مَا ذُكِّرُوۡا بِهٖۤ اَنۡجَيۡنَا الَّذِيۡنَ يَنۡهَوۡنَ عَنِ السُّوۡٓءِ وَاَخَذۡنَا الَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا بِعَذَابٍۢ بَـئِيۡسٍۢ بِمَا كَانُوۡا يَفۡسُقُوۡنَ ۝۱۶۵ (پ ۹، الاعراف: ۱۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब भुला बैठे जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे और ज़ालिमों को बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का।*

नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना हर ज़माने में नेक लोगों की आ़दत रही है और (यूंही) क़ियामत क़ाइम होने तक जारी रहेगी। जैसा कि ह़दीसे पाक में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की खुश ख़बरी दी। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत उस वक़्त क़ाइम होगी जब ज़मीन पर **अल्लाह अल्लाह** कहने वाला कोई न होगा।"(1)

1 ……صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب ذھاب ایمان اٰخر الزمان، الحدیث: ۳۷۵، ص ۷۰۲.

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत देने का फ़ाइदा

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने दीन की हिफ़ाज़त और इस का फैलाना अपने ज़िम्मए करम पर लिया हुवा है, जैसा कि वोह खुद कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٩﴾ (پ ١٤، الحجر: ٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद इस के निगहबान है।*

पस जिस ने हिदायत की दा'वत दी उस ने अपनी दा'वत से मदद हासिल की ऐसा नहीं है कि उसी ने दा'वते दीन का चर्चा किया कि अगर वोह न होता तो इस का प्रचार न होता और हर वोह शख़्स जिस ने दीन की मदद की बेशक उस ने दीन में अपने लिये मदद हासिल की। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है और बन्दे उस के मोहताज। उस के दीन की दा'वत किसी की मोहताज नहीं लेकिन दा'वत देने वाले मोहताज हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ बुलाने वाला अपने आप को और दूसरों को (हलाकत से) बचा लेता है। जब वोह कोताही करता और दा'वत देना छोड़ देता है तो अपने आप को हलाकत में डाल देता है और दूसरे भी हलाक हो जाते हैं।

नेकी की दा'वत न देने का अन्जाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सूरए माइदह में पिछली उम्मतों के एक शख़्स का क़िस्सा बयान फ़रमा कर उम्मते मुहम्मदिय्या को ईमान के इस अज़ीम शो'बे को छोड़ने से डराया है ताकि येह उम्मत नसीहत हासिल करे। खुश बख़्त है वोह शख़्स जो दूसरों से नसीहत हासिल करे। हम वोह क़िस्सा यूं ही बयान करते हैं जैसे कुरआने पाक और हदीस शरीफ़ में है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बनी इस्राईल पर सब से पहली बला येह आई कि

www.dawateislami.net

एक शख़्स (पहले दिन) दूसरे से मुलाक़ात करता तो कहता : ऐ फुलां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और जो तू कर रहा है उसे छोड़ दे क्यूंकि येह तेरे लिये जाइज़ नहीं। मगर जब दूसरे दिन उस से मुलाक़ात करता तो उसे न रोकता बल्कि उस के साथ खाता-पीता, उठता-बैठता। जब उन्हों ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों के दिल एक जैसे कर दिये। फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّ كَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝ تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْاؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ فِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ۝ وَ لَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ النَّبِيِّ وَ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَ لٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝

(پ ٦، المائدہ: ٧٨ تا ٨١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ला'नत किये गए वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया बनी इस्राईल में दावूद और ईसा बिन मरयम की ज़बान पर येह बदला उन की ना फ़रमानी और सरकशी का जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे उन में तुम बहुत को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती करते हैं क्या ही बुरी चीज़ अपने लिये खुद आगे भेजी येह कि **अल्लाह** का उन पर ग़ज़ब हुवा और वोह अ़ज़ाब में हमेशा रहेंगे और अगर वोह ईमान लाते **अल्लाह** और उन नबी पर और उस पर जो उन की त़रफ़ उतरा तो काफ़िरों से दोस्ती न करते मगर उन में तो बहुतेरे फ़ासिक़ हैं।*

फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़बरदार ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम ज़रूर **नेकी की दा'वत** देते रहना और बुराई से मन्अ़ करते रहना। ज़ालिम का हाथ पकड़ कर उसे ह़क़ की त़रफ़ झुका देना और ह़क़ बात क़बूल करने पर उसे मजबूर कर देना।"(1)

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، الحدیث: ٤٣٣٦، ص ١٥٣٩.

www.dawateislami.net

हृदीसे पाक में लफ़्ज़ "تَأْطُرُوْنَهُمْ" का मा'ना है "تَلْزَمُوْنَهُمْ بِاتِّبَاعِ الْحَقِّ" या'नी उन्हें हक़ की पैरवी करने पर मजबूर कर देना। और शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस बाब में **नेकी की दा'वत** न देने और बुराई से मन्अ़ न करने के नुक़्सानात बयान करने के लिये एक और मिसाल बयान फ़रमाई। चुनान्चे,

हृज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह्कामात पर क़ाइम रहने वाले (या'नी **नेकी की दा'वत** देने वाले) और इस की हुदूद को पामाल करने वाले की मिसाल उन लोगों की सी है जिन्हों ने किश्ती के हिस्से बाहम तक़्सीम कर लिये। बा'ज़ को ऊपर वाला हिस्सा मिला और बा'ज़ को नीचे वाला। नीचे वालों को जब प्यास लगती तो ऊपर वालों के पास जाना पड़ता। इन्हों ने कहा : हम अपने हिस्से में सूराख़ कर लेते हैं इस से ऊपर वालों के पास जाने की ज़हमत से बच जाएंगे। अगर ऊपर वाले इन को छोड़ देते हैं तो तमाम हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर वोह इन को रोकते हैं तो येह भी बच जाएंगे और दीगर तमाम लोग भी नजात पा जाएंगे।"(1)

इस अ़ज़ीम काम में सुस्ती करना ऐसे फ़ितनों को दा'वत देने के मुतरादिफ़ है जिन में अ़क़्लें हैरान रह जाएंगी और इन से छुटकारे की राह निकालने से आ़जिज़ आ जाएंगी। जैसा कि हृदीसे पाक में है। चुनान्चे,

हृज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम्हारी औ़रतें ना फ़रमान हो जाएंगी, तुम्हारे नौजवान फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला हो जाएंगे

(1) ......صحيح البخاری، کتاب الشرکة،باب هل يقرع فی القسمة والاستهام فيه،الحديث: ۲۴۹۳،ص ۱۹۲.

www.dawateislami.net

और तुम जिहाद को छोड़ दोगे ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या ऐसा भी होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुआ़मला इस से भी सख़्त होगा।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस से ज़ियादा सख़्त क्या होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब तुम **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना छोड़ दोगे ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या ऐसा भी होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! आने वाले वक़्त में मुआ़मला इस से भी सख़्त होगा ।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस से भी सख़्त क्या होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब तुम नेकी को बुराई और बुराई को नेकी समझोगे ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या ऐसा भी होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुआ़मला इस से ज़ियादा संगीन होगा।" लोगों ने अ़र्ज़ की : "इस से ज़ियादा संगीन क्या होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "उस वक़्त तुम्हारी ह़ालत कैसी होगी जब तुम बुराई की दा'वत दोगे और नेकी से मन्अ़ करोगे ?" लोगों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या ऐसा भी होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मुआ़मला इस से भी ज़ियादा शदीद होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उन्हें ऐसी आज़माइश में मुब्तला कर दूंगा जिस में समझदार शख़्स भी ह़ैरान रह जाएगा।"(1)

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف والنھی عن المنکر، الباب الاول، ج۲، ص۳۸۰.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ुरआन फ़हमी

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۰۵﴾ (پ۷،المائدہ:۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो तुम सब की रुजूअ़* **अल्लाह** *ही की त़रफ़ है फिर वोह तुम्हें बता देगा जो तुम करते थे।*

इस आयत का सह़ीह़ मफ़्हूम और लोगों को इस से आगाह करने वाले सब से पहले शख़्स अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को इस आयत की ग़लत़ तावील और ऐसी तफ़्सीर करने से डराया जिस से मुसलमानों को **नेकी की दा'वत** देने का एहतिमाम फ़ौत हो रहा था। चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने (मज़्कूरा आयते मुबारका के बारे में) इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम इस आयते करीमा की तिलावत करते हो और इसे इस के सह़ीह़ मक़ाम से हटा कर रखते हो। बेशक हम ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : ''जब लोग ज़ालिम को (ज़ुल्म करता) देखें और उस के हाथ न पकड़ें तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तला कर दे।''(1)

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा ख़ुशनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़्कूरा आयते मुबारका पर तम्बीह करने में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी की। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमय्या शा'बानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم،باب الامر و النھی،الحدیث۴۳۳۸،ص ۱۵۳۹.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू सा'लबा ख़ुशनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "ऐ अबू सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हैं ?" इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने इस आयत के मुतअ़ल्लिक़ हक़ीक़ी तौ़र पर वाक़िफ़ ज़ात या'नी हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**नेकी की दा'वत** दो और बुराई से मन्अ़ करो यहां तक कि जब तुम देखो कि बुख़्ल की इत़ाअ़त, ख़्वाहिश की पैरवी, दुन्या को तरजीह़ दी जा रही है और हर राए वाला अपनी राए को अच्छा समझ रहा है तो तुम पर अपनी इस्लाह़ लाज़िम है और आ़म लोगों (का ख़याल) छोड़ दो, क्यूंकि तुम्हारे बा'द सब्र के दिन हैं। उन में सब्र करना ऐसे है जैसे अंगारे को पकड़ना, उन में नेक अ़मल करने वाले का अज्र 50 आदमियों के बराबर होगा।"(1)

एक रिवायत में यूं है, अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम में से 50 आदमियों का अज्र या उन में से ?" इरशाद फ़रमाया : "बल्कि तुम में से 50 आदमियों का अज्र।"(2)

मा'रूफ़ का मफ़्हूम

मा'रूफ़ ऐसा वसीअ़ मा'ना रखने वाला लफ़्ज़ है जो तमाम पसन्दीदा उमूर को शामिल है। जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त करना। उस का क़ुर्ब ह़ासिल करना। लोगों से हुस्ने सुलूक करना। शरीअ़ते मुत़ह्हरा की पसन्दीदा बातों को अपनाना और ममनूआ़ते शरइ़य्या से बचना और **मा'रूफ़** सिफ़ाते ग़ालिबा में से है या'नी लोगों के दरमियान ऐसा मश्हूरो मा'रूफ़ है कि जब उसे देखते हैं तो उस का इन्कार नहीं करते।

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، الحدیث: ۴۳۴۱، ص ۱۵۳۹.

2 .....سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، الحدیث: ۴۳۴۱، ص ۱۵۳۹، مفھوماً.

www.dawateislami.net

कभी **नेकी की दा'वत** सिर्फ़ क़ौल से होती है। जैसे फ़ुक़रा की मदद की दा'वत देना और कभी सिर्फ़ फ़े'ल से जैसे माल ख़र्च करना और कभी क़ौलो फ़े'ल दोनों के ज़रीए। "**क़ौल**" के ज़रीए जैसे किसी को ज़कात अदा करने की दा'वत देना। "**फ़े'ल**" के ज़रीए जैसे ज़कात की दा'वत देने वाले का ख़ुद ज़कात अदा करना।

मुन्कर की ता'रीफ़

येह (मा'रूफ़ की ता'रीफ़ में मज़कूर) तमाम उमूर की ज़िद है और इस से मुराद हर वोह बात है जिस की शरीअ़त ने बुराई बयान की हो। इसे ह़राम ठहराया हो या इसे ना पसन्द किया हो। कभी क़ौल के ज़रीए बुराई से मन्अ़ किया जाता है जैसे शराब नोशी से मन्अ़ करना। कभी सिर्फ़ फ़े'ल से जैसे शराब को बहा देना। जब क़ौल के ज़रीए बुराई से मन्अ़ किया जाए तो इसे نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر कहते हैं और फ़े'ल के ज़रीए मन्अ़ करने को تَغْيِيرٌ لِلْمُنْكَر (या'नी बुराई को बदलना) कहते हैं।

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना :

مَنْ رَاٰی مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهٖ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهٖ فَاِنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهٖ وَذٰلِكَ اَضْعَفُ الْاِيْمَانِ

"या'नी तुम में से जो शख़्स बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि उसे अपने हाथ से रोक दे। अगर इस की ताक़त नहीं रखता तो ज़बान से रोक दे। अगर इस की भी ताक़त नहीं रखता तो दिल से बुरा जाने और येह ईमान का कमज़ोर तरीन दरजा है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1 .....صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون نهی عن المنکر.....الخ، الحدیث: ۱۷۷، ص ۶۸۸.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से पहले जिस उम्मत में भी कोई नबी भेजा उस के लिये उस उम्मत में से मददगार और रफ़ीक़ हुवे हैं जो अपने नबी عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत पर अ़मल करते और उस के हुक्म की इत्तिबाअ़ करते। फिर उन के बा'द ऐसे गुरौह आए जो ऐसी बात कहते जिस पर ख़ुद अ़मल नहीं करते और ऐसे काम करते जिन का उन्हें हुक्म नहीं दिया जाता। पस जो शख़्स उन के साथ हाथ से जिहाद करे वोह मोमिन है। जो उन के साथ ज़बान से जिहाद करे वोह भी मोमिन है और जो उन के साथ दिल से जिहाद करे वोह भी मोमिन है। इस से नीचे राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : "जिस शख़्स ने कोई बुराई देखी और उसे अपने हाथ से बदल दिया तो वोह बरी हो गया और जो हाथ से बदलने की ताक़त नहीं रखता पस उस ने अपनी ज़बान से बदल दिया तो वोह भी बरियुज़्ज़िम्मा हो गया और जो ज़बान से बदलने की इस्तिताअ़त नहीं रखता उस ने अपने दिल से बुरा जाना तो वोह भी बरी हो गया और येह ईमान का कमज़ोर तरीन दरजा है।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! तुम ज़रूर **नेकी की दा'वत** देते रहना और बुराई से मन्अ़ करते रहना (अगर तुम ने ऐसा न किया तो) क़रीब है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाए फिर तुम उस से दुआ मांगते रहोगे लेकिन क़बूल न होगी।"(3)

---

1 .....صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون نھی عن المنکر.....الخ، الحدیث: ۱۷۹، ص۲۸۸.

2 .....سنن نسائی، کتاب الایمان وشرائعه، باب تفاضل اھل الایمان، الحدیث: ۵۰۱۲، ص ۲۴۱۱.

3 .....جامع الترمذی، ابواب الفتن، باب ماجاء فی الامر بالمعروف.....الخ، الحدیث: ۲۱۶۹، ص۱۸۶۹.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : "जिस क़ौम में गुनाह होते हों और वहां ऐसे लोग मौजूद हों जो उन्हें बदलने पर क़ादिर हों और फिर भी न बदलें तो उन की मौत से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाएगा।"(1)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना छोड़ दिया जाए तो मज़्कूरए बाला अह़ादीसे मुबारका में लफ़्ज़ "فَلْيُغَيِّرْهُ" (या'नी लाज़िम है कि वोह उसे बदल दे) और लफ़्ज़ "لَتَأْمُرُنَّ" (या'नी ज़रूर तुम हुक्म देना) और सूरए आले इमरान की आयत 104 में लफ़्ज़ "وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ" और आयत 110 में लफ़्ज़ "كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ" की रोशनी में बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक नेकी का हुक्म देना जब कि न दिया जा रहा हो और बुराई से मन्अ़ करना जब कि मन्अ़ न किया जा रहा हो फ़र्ज़े ऐन या'नी हर एक पर फ़र्ज़ है और बा'ज़ के नज़्दीक फ़र्ज़े किफ़ाया है कि अगर चन्द लोग येह फ़रीज़ा अन्जाम दे दें तो बक़िय्या लोगों से फ़र्ज़ साक़ित़ हो जाता है और अगर सब ही इसे तर्क कर दें तो वोह तमाम लोग गुनहगार होंगे जो बिग़ैर किसी उ़ज़्र और ख़ौफ़ के इस पर क़ादिर हों और कभी कभार **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना उस शख़्स पर लाज़िम हो जाता है जो ऐसे मक़ाम पर हो जहां उस के इ़लावा किसी और को इस फ़रीज़े का इ़ल्म न हो (इ़ल्म तो हो मगर) इस को मिटाने या इस से रोकने पर क़ादिर न हो (तो इस सूरत में उसी शख़्से वाह़िद पर **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना लाज़िम है।)

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم، باب الامر والنهی، الحدیث: ۴۳۳۹، ص ۱۵۳۹.

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम शिआ़र :

नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना शआ़इरे इस्लाम में से एक अ़ज़ीम शिआ़र है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस लिये वाजिब फ़रमाया है ताकि मुआ़शरा दुरुस्त रहे और गुनाह व जराइम कम हों। जो उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस बात के क़ाइल हैं कि **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना फ़र्ज़े ऐ़न है, वोह फ़रमाते हैं : "(येह काम जाहिल पर भी फ़र्ज़ है क्यूंकि) जाहिल को जिस बात का इ़ल्म है वोह इस में **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने की इस्तिता़अ़त रखता है। मसलन नमाज़ और रोज़े की अदाएगी और उस चीज़ से मन्अ़ करे जो उस पर पोशीदा नहीं, जैसे चोरी और ज़िना।" (मज़ीद) फ़रमाते हैं : "तमाम लोगों पर **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना इस लिये फ़र्ज़ है ताकि उम्मत की ह़िफ़ाज़त हो और इसे फ़साद व बिगाड़ से बचाया जाए।"

जिन उ़लमा के नज़दीक येह फ़र्ज़े किफ़ाया है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान :

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ

(پ۴،ال عمران:۱۰۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं।*

से इस्तिद्लाल करते हैं और फ़रमाते हैं कि आयते करीमा में लफ़्ज़ "مِنْ" **तबईज़िय्या** है (या'नी बा'ज़ के लिये है) पस **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और येह भी फ़रमाते हैं कि "येह उ़लमाए किराम की ज़िम्मेदारी है।" लेकिन सह़ीह़ येह है कि येह तमाम लोगों पर फ़र्ज़े किफ़ाया है और **नेकी की दा'वत** को तर्क करने में जाहिल के लिये कोई उ़ज़्र नहीं इस लिये कि वोह उसी काम के करने या न करने की दा'वत देगा जिस का उसे इ़ल्म है और इस में किसी को इख़्तिलाफ़ नहीं। मसलन नमाज़ की अदाएगी, चोरी और ज़िना से रोकना।

www.dawateislami.net

नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले की शराइत़

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये दर्जे ज़ैल शराइत़ हैं :

(1).....**मुकल्लफ़ होना** (या'नी अहलिय्यत होना) : **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना सिर्फ़ मुकल्लफ़ पर वाजिब है इस ए'तिबार से कि येह काम वाजिब है। इस का येह मा'ना नहीं कि बच्चे के लिये येह काम करना जाइज़ ही नहीं। पस (बच्चे के ह़क़ में) इस का हुक्म वोही है जो नमाज़ व रोज़े का है ह़ालांकि दोनों इस पर वाजिब नहीं और बच्चे को नमाज़ व रोज़े से मन्अ़ करना भी जाइज़ नहीं और अगर बच्चा **नेकी की दा'वत** न दे और बुराई से मन्अ़ न करे तो गुनहगार भी न होगा।

(2).....**मुसलमान होना : नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना सिर्फ़ मुसलमान पर वाजिब है ग़ैर मुस्लिम पर लाज़िम नहीं।

(3).....**क़ुदरत होना : नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह हुक्म देने और मन्अ़ करने पर क़ादिर हो और बुराई को बदलने की त़ाक़त भी रखता हो। अगर बदलने की त़ाक़त न रखता हो तो अब उस पर वाजिब नहीं सिर्फ़ दिल से बुरा जानना ज़रूरी है। या'नी गुनाहों को ना पसन्द करे, इन्हें बुरा जाने और इन में मुब्तला लोगों से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करे और इसी त़रह़ जब उसे तकलीफ़ पहुंचने का ख़ौफ़ हो या फिर बुराई से मन्अ़ करना किसी बड़ी बुराई तक ले जाए (तो भी इस पर **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब नहीं)

जिस शख़्स को मा'लूम हो कि उस का **नेकी की दा'वत** देना या बुराई से मन्अ़ करना हरगिज़ फ़ाइदा न देगा और जब बात करेगा तो उसे मारा जाएगा तो अब उस पर येह काम वाजिब नहीं सिर्फ़ येही वाजिब है कि वोह गुनाह से नफ़रत का इज़हार करे और इसे दिल से बुरा जाने। इस में मुब्तला लोगों से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करते हुवे गुनाहों और बुराइयों की जगहों से दूर रहे और जिसे येह मा'लूम हो कि जब वोह बुराई से मन्अ़ करेगा तो उसे ख़त्म

www.dawateislami.net

करने में कामयाब हो जाएगा या उस को तो ख़त्म कर देगा मगर लोग इस से कम दरजा बुराई में मुब्तला हो जाएंगे तो उस पर बुराई से मन्अ़ करना वाजिब है और जब उसे मा'लूम हो कि बुराई से मन्अ़ करना दूसरी बुराई तक ले जाएगा जो दरजे में इस के बराबर है तो अब उसे इख़्तियार है चाहे तो बुराई से मन्अ़ करे चाहे न करे। बहर ह़ाल जब उसे मा'लूम हो कि बुराई को ख़त्म करना दूसरी इस से बड़ी बुराई तक ले जाएगा तो अब उस से वाजिब साक़ित़ हो जाएगा बल्कि इस सूरत में बुराई से मन्अ़ करना ह़राम होगा और जिसे (यक़ीनी त़ौर पर) येह मा'लूम हो कि **नेकी की दा'वत** देना या बुराई से मन्अ़ करना कोई ख़ात़िर ख़्वाह फ़ाइदा न देगा लेकिन किसी मुसीबत का ख़ौफ़ भी नहीं तो उस पर नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब नहीं क्यूंकि इस से कोई फ़ाइदा ही ह़ासिल नहीं हो रहा लेकिन फिर भी उस के लिये **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना मुस्तह़ब है ताकि शआ़इरे इस्लाम का इज़्हार हो और लोगों को मा'लूम हो जाए कि येह दीनी काम है।

जो शख़्स अपने फ़े'ल से बुराई को मिटाने की त़ाक़त रखता हो लेकिन वोह जानता है कि बुराई को ख़त्म करने के सबब उसे कोई मुसीबत पहुंचेगी तो उस पर बुराई को मिटाना वाजिब नहीं अलबत्ता ! मुस्तह़ब ज़रूर है मगर वाजिब होने की वज्ह से नहीं बल्कि इस लिये कि येह एक नेकी है और जिसे सिर्फ़ वाज़ेह़ उमूर का इ़ल्म हो तो उस पर (उन्हीं उमूर में) **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब है। जैसे शराब नोशी, ज़िना, चोरी और नमाज़ को तर्क करना। इन के इ़लावा उमूर (जिन का उसे वाज़ेह़ इ़ल्म न हो उन) में उस पर **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब नहीं क्यूंकि अगर वोह (उन उमूर में) **नेकी की दा'वत** देगा और बुराई से मन्अ़ करेगा तो बसा अवक़ात बुराई का हुक्म दे देगा और नेकी से मन्अ़ कर बैठेगा और इस का फ़साद व बिगाड़ इस की इस्लाह़ से ज़ियादा हो जाएगा। और **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने के वुजूब के साक़ित़ होने में ज़न्ने ग़ालिब काफ़ी है। लिहाज़ा जब उस बात का ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि उस का मन्अ़

www.dawateislami.net

करना कोई ख़ातिर ख़्वाह फ़ाइदा न देगा तो उस पर मन्अ़ करना वाजिब नहीं और जिसे ज़न्ने ग़ालिब हो कि (मन्अ़ करने की वज्ह से) किसी मुसीबत में मुब्तला हो जाएगा तो भी मन्अ़ करना वाजिब नहीं और अगर ज़न्ने ग़ालिब हो कि (मन्अ़ करने की वज्ह से) उसे कोई मुसीबत न पहुंचेगी तो इस सूरत में **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब हो जाएगा। लिहाज़ा अगर ज़न्ने ग़ालिब हासिल न हो बल्कि सिर्फ़ शक हो तो इस सूरत में वाजिब साक़ित न होगा।

(4).....**आदिल होना :** बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "**नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह फ़ासिक़ न हो।" वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन दो फ़रामैने मुबारका से इस्तिद्लाल करते हैं :

﴿1﴾

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (پ ۱، البقرة: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो।*

﴿2﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ (پ ۲۸، الصف: ۲، ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते कैसी सख़्त ना पसन्द है **अल्लाह** को वोह बात कि वोह कहो जो न करो।*

इन की राए येह है कि दूसरों को हिदायत की त़रफ़ लाना अपने हिदायत याफ़्ता होने पर मौक़ूफ़ है और यूं ही दूसरों को राहे रास्त पर लाना अपनी इस्तिक़ामत पर मौक़ूफ़ है और जो शख़्स अपनी इस्लाह़ करने से आ़जिज़ हो वोह दूसरों की इस्लाह़ कैसे करेगा ? और ह़क़ येह है कि **नेकी की दा'वत** देने वाले में फ़िस्क़ो फ़ुजूर का बिल्कुल न होना शर्ते कमाल है और उस पर लाज़िम है कि अपनी इस्लाह़ की कोशिश करे और दूसरों को नसीह़त करने से पहले अपने आप को नसीह़त करे।

www.dawateislami.net

जैसा कि किसी शाइर ने ख़ूब कहा है :

لَا تَـنْـــهَ عَـنْ خُـلُـقٍ وَتَـاْتِـي مِثْـلَـهُ　　عَــارٌ عَــلَيْكَ اِذَا فَــعَـلْـتَ عَـظِيْــمُ

اِبْــدَأْ بِــنَـفْـسِكَ فَانْهَهَا عَـنْ غَيِّهَا　　فَــاِذَا انْتَهَـــتْ عَـنْــهُ فَاَنْتَ حَـكِيْـمُ

तर्जमा : (1).....ऐसी बुरी बात से मन्अ़ न कर जिस की मिस्ल तू ख़ुद करता है जब तू ऐसा करे तो तुझ पर बड़ी मलामत है।

(2).....अपने नफ़्स से इब्तिदा कर इसे सरकशी से मन्अ़ कर अगर येह सरकशी से बाज़ आ जाए तो तू साहिबे हिक्मत है।

एक और शाइर ने कुछ इस त़रह़ कहा है :

وَغَيْــرُ تَـقِـيٍّ يَــاْمُـرُ النَّاسَ بِـالتُّقٰی　　طَبِيْـــبٌ يُـدَاوِی الـنَّـــاسَ وَهُـوَ عَلِيْلُ

तर्जमा : लोगों को नेकी का हुक्म देने वाला बे अ़मल शख़्स उस त़बीब की त़रह़ है जो ख़ुद तो बीमार है लेकिन दूसरों का इलाज करता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : क़ियामत के दिन एक शख़्स को ला कर जहन्नम में डाला जाएगा तो उस के पेट की आंतें निकल पड़ेंगी, वोह इस त़रह़ चक्कर खाएगा जिस त़रह़ गधा चक्की के साथ घूमता है इस पर तमाम दोज़ख़ी जम्अ़ हो जाएंगे और कहेंगे : "ऐ फ़ुलां ! तुझे क्या हुवा ? क्या तू लोगों को **नेकी की दा'वत** नहीं देता था और बुराई से मन्अ़ नहीं करता था ?" वोह कहेगा : "हां ! क्यूं नहीं ! मैं **नेकी की दा'वत** देता था लेकिन ख़ुद अ़मल नहीं करता था, बुराई से रोकता था मगर ख़ुद इस का मुर्तकिब था।" (1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने लैलतुल अस्रा (या'नी मे'राज की रात) ऐसे लोगों को

---

1 ......صحیح المسلم، کتاب الزھد(والرقائق)،باب عقوبۃ من یأ مربالمعروف ولایفعلہ......الخ، الحدیث:۲۹۸۹،ص۱۵۹۵.

www.dawateislami.net

देखा जिन के होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे तो मैं ने पूछा : "ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ?" जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "येह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के ख़तीब हैं जो लोगों को तो **नेकी की दा'वत** देते थे मगर अपने आप को भूल जाते थे ह़ालांकि क़ुरआने पाक में इस फ़रमाने बारी तआ़ला "اَفَلَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۲۳، یٰسٓ:۶۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो क्या समझे नहीं !" की तिलावत किया करते थे।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह अज़दी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों को अच्छी बात बताने और अपने आप को भूल जाने वाले की मिसाल उस चराग़ की सी है जो दूसरों को तो रोशन करता है लेकिन अपने आप को जलाता है।"(2)

मरवी है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "ऐ इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ! मैं चाहता हूं कि **नेकी की दा'वत** दूं और बुराई से मन्अ़ करूं।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "क्या तुम (अपनी इस्लाह़ करने में) ह़द्दे कमाल को पहुंच चुके हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "उम्मीद है।" इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हें क़ुरआने पाक के तीन हुरूफ़ की वज्ह से रुस्वा होने का ख़ौफ़ न हो तो येह काम करो।" उस ने अ़र्ज़ की : "वोह हुरूफ़ कौन से हैं ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह आयते करीमा :

---

1 .....الترغیب والترھیب، کتاب الحدود وغیرھا، باب الترھیب من ان یأمر بمعروف.....الخ، الحدیث:۳۵۴۸، ج۳، ص۱۸۷.

2 .....الترغیب والترھیب، کتاب الحدود وغیرھا، باب الترھیب من ان یأمربمعروف.....الخ، الحدیث:۳۵۵۳، ج۳، ص۱۸۸.

www.dawateislami.net

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ (پ۱، البقرة:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ?*

तिलावत करने के बा'द उस से पूछा : "क्या तुम्हें इस आयत का हुक्म मा'लूम है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं ।" फिर उस ने अ़र्ज़ की : "दूसरा ह़र्फ़ कौन सा है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ (پ۲۸، الصف:۲، ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो क्यूं कहते हो वोह जो नहीं करते । कैसी सख़्त ना पसन्द है* **अल्लाह** *को वोह बात कि वोह कहो जो न करो ।*

फिर फ़रमाया : "इस आयत का हुक्म जानते हो ?" अ़र्ज़ की : "नहीं ।" फिर उस ने अ़र्ज़ की : "तीसरा ह़र्फ़ कौन सा है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐ़ब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का क़ौल है (जो क़ुरआने पाक में मज़्कूर है) ।"

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ اِلٰى مَاۤ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ؕ (پ۱۲، هود:۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मैं नहीं चाहता हूं कि जिस बात से तुम्हें मन्अ़ करता हूं आप उस के ख़िलाफ़ करने लगूं ।*

इसे तिलावत करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : "क्या इस आयत के हुक्म से आगाह हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "नहीं ।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अपने नफ़्स से इब्तिदा करो ।"(1)

1 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی الامر بالمعروف والنهی عن المنکر، الحدیث: ۷۵۲۹، ج۶، ص۸۸.

www.dawateislami.net

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के नज़्दीक सह़ीह़ क़ौल येह है कि **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि जिस की दा'वत दे रहा है कामिल त़ौर पर उस पर अ़मल करने वाला हो और जिस से मन्अ़ कर रहा है मुकम्मल त़ौर पर उस से बचने वाला हो। बल्कि उस पर **नेकी की दा'वत** देना वाजिब है अगर्चे जिस की दा'वत दे रहा है मुकम्मल त़ौर पर उस को अपनाने वाला न हो और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब है अगर्चे जिस से रोक रहा है मुकम्मल त़ौर पर उस से बचने वाला न हो। क्यूंकि उस पर दो चीज़ें वाजिब हैं : (1)...ख़ुद को **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना। (2)...दूसरों को **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना। अगर दोनों में से किसी एक में सुस्ती कर रहा हो तो दूसरे में कोताही करना जाइज़ नहीं। **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये येह शर्त़ नहीं कि वोह तमाम गुनाहों से मह़फ़ूज़ भी हो इस लिये कि इस शर्त़ को लाज़िम क़रार देने से **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने का दरवाज़ा ही बन्द हो जाएगा। येही वज्ह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के लिये येह ज़रूरी हो कि वोह हर बुराई से मुबर्रा (م۔بَر۔را) और हर अच्छाई से मुज़य्यन (م۔زَی۔یَن) हो तो फिर न तो कोई **नेकी की दा'वत** देने वाला होगा और न ही कोई बुराई से मन्अ़ करने वाला।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी अह़ादीस में वारिद सख़्त वईद **नेकी की दा'वत** देने वाले पर नहीं बल्कि बुराई के मुर्तकिब पर है जब कि वोह आ़लिम हो। लोगों को नसीह़त करता हो और बुराई से नफ़रत दिलाता हो। **नेकी की दा'वत** देना न तो बा अ़मल से साक़ित़ है और न ही बे अ़मल से और इस काम में तो भलाई ही भलाई है और वईद से शारेअ़ عَلَیْہِ السَّلَام का मक़्सूद येह है कि **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला अपने फ़े'ल को क़ौल के मुत़ाबिक़ करे ताकि जब वोह बुराई को ख़त्म करे और नेकी को आ़म करे तो उस की बात में तासीर हो।

www.dawateislami.net

(5).....**इजाज़त होना :** इस ए'तिबार से इजाज़त ज़रूरी है कि सब से पहले हुक्मरान ही से **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाएगा। बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने इज़्न को ज़रूरी क़रार दिया है ताकि **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना फ़ितना व फ़साद की त़रफ़ न ले जाए इस लिये कि ह़ाकिम ऐसे शख़्स को मुन्तख़ब करने की इस्तित़ाअ़त रखता है जो इस अहम काम को अह़सन त़रीक़े से सर अन्जाम दे और सह़ीह़ क़ौल येह है कि **नेकी की दा'वत** देने से किसी को मन्अ़ न किया जाए क्यूंकि क़ुरआनो सुन्नत में इस का हुक्म आ़म है जो हर एक पर **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने को वाजिब करता है और बुराई को देख कर ख़ामोश रहने वाले हर उस शख़्स को गुनाहगार क़रार देता है जो रोकने पर क़ादिर हो। येही वज्ह है कि ह़ाकिमे वक़्त की त़रफ़ से मुक़र्रर मोह़तसिब (या'नी पूछगछ करने वाले) की मौजूदगी और अ़दमे मौजूदगी के बावुजूद हर दौर में लोग **नेकी की दा'वत** देते और बुराई से मन्अ़ करते रहे।

اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر की शराइत़

नेकी की दा'वत देना, नसीह़त, हिदायत, राहनुमाई करने और इ़ल्मे दीन की ता'लीम देने का नाम है। इस के लिये न तो कोई शर्त़ है और न ही कोई ख़ास वक़्त। बल्कि हर वक़्त और हर ह़ालत में जाइज़ है। हां ! बुराई को बदलने और इस से मन्अ़ करने के लिये ख़ास शराइत़ हैं जिन का पाया जाना ज़रूरी है और वोह शराइत़ दर्जे ज़ैल हैं।

(1)..... **बुराई का पाया जाना :** मुन्कर हर उस बुराई को कहते हैं जिसे शरीअ़त ने ह़राम या ना पसन्द किया हो या हर वोह काम जिस का इर्तिकाब शरीअ़त में ममनूअ़ हो। इस लिये कि ममनूअ़ फ़े'ल अगर मुकल्लफ़ से सरज़द हो तो उस के ह़क़ में गुनाह है और ग़ैर मुकल्लफ़ से हो तो उस के ह़क़ में ममनूअ़ है और बुराई का मुर्तकिब मुकल्लफ़ हो या ग़ैर मुकल्लफ़, साबिक़ा शराइत़ के मुत़ाबिक़ उसे मन्अ़ किया जाएगा।

www.dawateislami.net

तो जो शख़्स किसी बच्चे या पागल को शराब पीते देखे तो उस पर लाज़िम है कि शराब को बहा दे और उसे इस फ़े'ल से रोके अगर्चे पीने वाले पर मुआख़ज़ा नहीं और बुराई छोटी हो या बड़ी इस से रोकना और मन्अ़ करना वाजिब है। किसी भी काम को उस वक़्त तक बुरा नहीं कहा जा सकता जब तक उस पर क़ुरआनो ह़दीस और इजमाए़ उम्मत से दलील क़ाइम न हो जाए और रहे वोह मसाइले इजतिहादिय्या कि जिन के मुतअ़ल्लिक़ कोई दलील वारिद न हो तो किसी भी मुज्तहिद पर बुराई के इर्तिकाब का हुक्म नहीं लगा सकते, बल्कि अगर वोह ह़क़ पर है तो उस के लिये दो नेकियां हैं और ख़त़ा पर है तो एक नेकी।

(2).....**बुराई से रोकते वक़्त इस का पाया जाना :** जब कोई मर्द किसी अजनबी औ़रत के साथ तन्हाई में बैठा हो तो उसे मन्अ़ किया जाएगा या शराब पी रहा हो तो उसी वक़्त उसे बहा दिया जाएगा। बहर ह़ाल जब बुराई से फ़ारिग़ हो जाए तो अब मन्अ़ करने का कोई मौक़अ़ नहीं। हां ! इस जुर्म पर उस की गिरिफ़्त की जाएगी मगर येह काम सिर्फ़ ह़ाकिमे वक़्त का है अ़वामुन्नास के लिये जाइज़ नहीं कि उस को सज़ा दें यहां तक कि अगर किसी आ़म शख़्स ने उस पर ज़ियादती की तो उस ने उसे अज़िय्यत दी और उस के ह़क़ में जुर्म का मुर्तकिब हुवा और जब बुराई का इमकान हो जैसे वोह शख़्स जो लड़कियों से मुलाक़ात करने के लिये स्कूल और कॉलेज के गेट पर खड़ा होता है या वोह शख़्स जो शराब नोशी के लिये मेज़ तय्यार करता है तो इस सूरत में उसे वा'ज़ो नसीह़त करना जाइज़ है। हां ! अगर वोह शख़्स ज़िना या शराब नोशी से नफ़रत का इज़हार करे और उस ने मेज़ खाने के लिये तय्यार की हो तो अब उस को वा'ज़ो नसीह़त करना और बुराई से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं कि इस में मुसलमान भाइयों के साथ बद गुमानी का पहलू निकलता है।

(3)...**टोह में पड़े बिग़ैर बुराई का ज़ाहिर होना :** अगर तफ़्तीश या पूछगछ के बिग़ैर बुराई ज़ाहिर न हो सकती हो तो उसे ज़ाहिर करना जाइज़ नहीं क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दूसरों की टोह में पड़ने को ह़राम फ़रमाया है।

www.dawateislami.net

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶،الحجرات:۱۲) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* *और ऐ़ब न ढूंढो।*

दूसरी वज्ह येह है कि हर मकान और हर शख़्स की इ़ज़्ज़त व हुरमत है जिसे बुराई ज़ाहिर होने से पहले पामाल करना जाइज़ नहीं। तीसरी वज्ह येह है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों के उ़यूब तलाश करने से मन्अ़ फ़रमाया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बर्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ वोह लोगो जो ज़बानी तो ईमान ले आए लेकिन अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुवा ! मुसलमानों की ग़ीबत मत किया करो और न ही उन के ऐ़ब तलाश करो क्यूंकि जो शख़्स दूसरों के ऐ़ब तलाश करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमा देता है और जिस के ऐ़ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ाहिर फ़रमा दे तो उसे उस के घर में भी रुस्वा कर देता है।"(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : "अगर तुम लोगों के ऐ़बों के पीछे पड़े तो तुम ने उन की इ़ज़्ज़तों को ख़राब कर दिया या अ़न क़रीब तुम उन की इ़ज़्ज़तों को ख़राब कर दोगे।"(2)

जिस ने अपने घर में छुप कर बुराई की तो उस की तफ़्तीश करना जाइज़ नहीं क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस से मन्अ़ फ़रमाया है।

चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶،الحجرات:۱۲) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* *और ऐ़ब न ढूंढो।*

---

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الغیبۃ، الحدیث:۴۸۸۰، ص ۱۵۸۱.

2 .....سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی التجسس، الحدیث:۴۸۸۸، ص ۱۵۸۲.

www.dawateislami.net

ऐब तलाश न करो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुरर्हमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं एक रात मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बाहर निकला। हम चल रहे थे कि अचानक हमें एक चराग़ दिखाई दिया तो हम उस का क़स्द कर के चलने लगे। जब हम उस के क़रीब पहुंचे तो दरवाज़ा बन्द था और अन्दर से शोरो ग़ुल की आवाज़ें आ रही थीं। अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया : "जानते हो येह किस का घर है?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "येह रबीआ़ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ का घर है और येह लोग इस वक़्त शराब नोशी कर रहे हैं (इन के बारे में) आप की क्या राए है?" मैं ने अ़र्ज़ की : "मेरा ख़याल है कि जिस चीज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें मन्अ़ फ़रमाया है हमें इसे मल्हूज़े ख़ातिर रखना चाहिये। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶، الحجرات:۱۲) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और ऐब न ढूंढो।*

तो अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस लौट आए और उन्हें छोड़ दिया।"

ख़लीफ़ए सानी की अनोखी हिकायत

मरवी है कि एक रात अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में घूम रहे थे कि एक मकान से किसी शख़्स के गाना गाने की आवाज़ सुनी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीवार फलांग कर अन्दर तशरीफ़ ले गए तो उस के पास एक औ़रत और शराब को मौजूद पाया। इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन ! क्या तू येह समझता है कि तू गुनाह करता रहेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी पर्दापोशी फ़रमाता रहेगा ?" उस ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी न कीजिये ! मैं ने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ना फ़रमानी की जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तीन ना फ़रमानियां की हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تَجَسَّسُوْا (پ۲۶، الحجرات:۱۲) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और ऐब न ढूंढो।*

जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दूसरों की टोह में पड़े हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَیْسَ الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُیُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا (پ۲، البقرة:۱۸۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और येह कुछ भलाई नहीं कि घरों में पछेत (पिछली दीवार) तोड़ कर आओ।*

जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरी दीवार फलांग कर आए हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُیُوْتًا غَیْرَ بُیُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا (پ۱۸، النور:۲۷) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ ईमान वालो ! अपने घरों के सिवा और घरों में न जाओ जब तक इजाज़त न ले लो।*

जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे घर में अचानक और बिग़ैर सलाम किये दाख़िल हो गए हैं।" इस पर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर मैं तुम्हें मुआ़फ़ कर दूं तो क्या भलाई की उम्मीद है ?" अ़र्ज़ की : "जी हां ! ऐ अमीरल मोमिनीन ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें तो मैं ऐसा काम कभी नहीं करूंगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे मुआ़फ़ फ़रमा कर वहां से तशरीफ़ ले गए और उसे छोड़ दिया।"

जो शख़्स अपने घर में छुप जाए और दरवाज़ा बन्द कर ले तो उसे अमान दी जाएगी अगर्चे वोह कैसा ही जुर्म करे। हां ! अगर उस का जुर्म मुसलमानों को अपनी लपेट में ले रहा हो तो अब उसे अमान नहीं दी जाएगी। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरों की

www.dawateislami.net

टोह में पड़ने और उन की बातें चोरी छुपे सुनने से मन्अ़ फ़रमाया है। जैसा कि आप जान चुके हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स चुपके से लोगों की बातें सुने और उन्हें येह ना गवार गुज़रे तो क़ियामत के दिन उस के कानों में सीसा उंडेला जाएगा।"(1)

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कातिब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हैसम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "मेरे पड़ोसी शराब नोशी करते हैं और मैं पुलीस को बुलाना चाहता हूं ताकि वोह उन्हें गिरिफ़्तार कर ले।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐसा मत करो, उन्हें वा'ज़ो नसीह़त करो।" अ़र्ज़ की : "मैं ने उन्हें मन्अ़ किया है लेकिन इस के बा वुजूद वोह बाज़ नहीं आते, (तो अब) मैं पुलीस को बुलाना चाहता हूं ताकि उन्हें गिरिफ़्तार कर ले।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तेरी हलाकत हो, ऐसा मत कर क्यूंकि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना कि "जिस ने किसी का ऐब छुपाया गोया उस ने ज़िन्दा दरगोर लड़की को उस की क़ब्र में ज़िन्दा किया।"(2)

जब तक गुनाह करने वाला अपने गुनाह को छुपाता रहे उस वक़्त तक हमारे लिये जाइज़ नहीं कि उस की पर्दा दरी करें जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पर्दापोशी फ़रमाई है। हां ! अगर उस ने ए'लानिय्या तौ़र पर गुनाह किया तो उस ने ख़ुद अपना पर्दा फ़ाश किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तो उस पर पर्दा डाला था। लिहाज़ा अब उस की इ़ज़्ज़त व ह़ुरमत बाक़ी न रही। पस किसी की तफ़्तीश करना और टोह में पड़ना ह़राम है।

1......صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب من کذب فی حلمه، الحدیث: ۷۰۴۲، ص ۵۸۸.
2......صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الجار، الحدیث: ۵۱۸، ج۱، ص ۳۶۷

www.dawateislami.net

(4).....**बुराई को अच्छे त़रीक़े से दूर करना :** जब बुराई से रोकने वाला इस को दूर करने पर क़ादिर हो तो उस के लिये इस में कमी या ज़ियादती करना जाइज़ नहीं इस लिये कि जब तक वोह अपनी पूरी त़ाक़त सर्फ़ नहीं करेगा उस वक़्त तक कमा ह़क़्क़ुहू बुराई का ख़ातिमा नहीं कर सकता क्यूंकि वोह इसे अपनी क़ुदरत से दूर कर सकता है और अगर बुराई के ख़ातिमे में मुबालग़ा करेगा जब कि बुराई आसान त़रीक़े से ख़त्म हो सकती है तो उस ने बुराई करने वाले के ह़क़ में जुर्म का इर्तिकाब (ارتکاب) किया क्यूंकि उस ने बुराई करने वाले पर ज़ियादती की है और अगर बुराई को ख़त्म करने पर क़ादिर न हो तो उस के लिये जाइज़ है कि मुमकिना ह़द तक इस को रोके। पस अगर बुराई हाथ से दूर हो सकती हो मगर वोह शख़्स हाथ से दूर करने की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता तो इसे ज़बान से दूर करे। और अगर ज़बान से मन्अ़ करने से भी आ़जिज़ है तो दिल में बुरा जाने।

हमारी इस तक़रीर से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि बुराई और इस के मुर्तकिब दोनों के ए'तिबार से इसे दूर करने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े इख़्तियार किये जाएं। क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात एक शख़्स बुराई को ख़त्म करने पर क़ादिर होता है मगर दूसरा नहीं होता और कभी एक शख़्स एक ही बुराई को ख़त्म करने की त़ाक़त रखता है लेकिन दूसरी को ख़त्म नहीं कर सकता।

बुराई ख़त्म करने के मुख़्तलिफ़ त़रीक़े

बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने बुराई ख़त्म करने के लिये दर्जे ज़ैल त़रीक़े बयान फ़रमाए हैं :

﴿1﴾.....**बुराई की निशान देही करना :** बा'ज़ अवक़ात एक शख़्स बुराई का इर्तिकाब करता है लेकिन उसे मा'लूम नहीं होता कि येह बुराई है तो इसे दूर करने का बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि उसे बताया जाए कि येह बुराई है और प्यार व मह़ब्बत के साथ उस की राहनुमाई की जाए क्यूंकि बुराई बताने में एक त़रह़ से इस की जहालत को ज़ाहिर करना पाया जाता

www.dawateislami.net

है और येह उस की ज़ात के ए'तिबार से उसे ईज़ा देना है। लेकिन बुराई दूर करना भी ज़रूरी है। लिहाज़ा वाजिब है कि इन्तिहाई महब्बत भरे अन्दाज़ में उसे समझाया जाए कहीं ऐसा न हो कि बजाए ख़ैर ख़्वाही के ईज़ाए मुस्लिम के जुर्म में मुब्तला हो जाए। क्यूंकि किसी मुसलमान को (बिला इजाज़ते शरई) तक्लीफ़ देना हराम है।

﴿2﴾.....**वा'ज़ो नसीहत के ज़रीए बुराई दूर करना :** येह त़रीक़ा उस वक़्त इख़्तियार किया जाएगा जब बुराई करने वाला जानता हो कि येह बुराई है और ज़न्ने ग़ालिब हो कि बुराई छोड़ देगा। मसलन ग़ीबत करने वाला शख़्स जानता है कि येह हराम है। अगर उसे समझाया जाए तो क़वी उम्मीद है कि वोह इसे तर्क कर देगा तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिलाया जाए और उस के सामने अहादीसे मुबारका से मिसालें बयान की जाएं।

मदनी फूल : बुराई से मन्अ करने वाले पर लाज़िम है कि वोह बुराई करने वाले को शफ़्क़त भरी निगाहों से देखे और येह गुमान करे कि येह शख़्स जो बुराई करना चाहता है वोह इस की जान पर मुसीबत है और मन्अ करने वाला अपने आप को हरगिज़ इस से अच्छा गुमान न करे। अगर उस ने येह गुमान किया कि मैं इस से बेहतर और अफ़्ज़ल हूं। इस से ज़ियादा परहेज़गार हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मेरा मक़ाम इस से बुलन्द है। अपने आप को आ़लिम और इसे जाहिल समझा तो उस ने इस से बदतर गुनाह का इर्तिकाब किया। क्यूंकि शैत़ान को उस के तकब्बुर ने ही जन्नत से निकाला और उस के तकब्बुर व फ़ख़्र ने ही उसे मलऊ़न बनाया। मन्अ करने वाले पर लाज़िम है कि जिसे मन्अ कर रहा है उसे अपना भाई समझे। वोह इसे उस गुनाह से बचाए जिस में इस के पड़ने का इमकान है और शैत़ान के ख़िलाफ़ इस का मददगार साबित हो और इसे गुनहगारों की सफ़ से निकाल कर नेकूकार मोमिनीन की सफ़ में ला खड़ा करे। इस की अ़लामत येह है कि इसे इन्तिहाई महब्बत व शफ़्क़त के साथ मन्अ करे कि जिस में सख़्ती व गुस्से का नाम तक न हो।

www.dawateislami.net

﴿3﴾.....**सख़्ती से मन्अ़ करना :** इस त़रीक़ए कार को उस वक़्त अपनाया जाए जब मह़ब्बत से समझाना बेकार हो और येह वाज़ेह़ हो जाए कि बुराई करने वाला रुकने के बजाए इसरार करने वाला और वा'ज़ो नसीह़त पर मज़ाक़ उड़ाने वाला है। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौम से पूछा (जिसे क़ुरआने पाक में यूं बयान फ़रमाया गया) :

مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿۵۳﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۵۴﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿۵۵﴾

(پ۱۷، الانبیاء: ۵۲تا۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह मूरतें क्या हैं जिन के आगे तुम आसन मारे (पूजा के लिये बैठे) हो बोले हम ने अपने बाप दादा को इन की पूजा करते पाया कहा बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा सब खुली गुमराही में हो बोले क्या तुम हमारे पास ह़क़ लाए हो या यूंही खेलते हो।*

तो आप عَلَیْہِ السَّلَام पर अच्छी त़रह़ वाज़ेह़ हो गया कि येह क़ौम तौबा करने के बजाए बुतों की पूजा करने और मेरा मज़ाक़ उड़ाने पर मुसिर्र है क्यूंकि मज़कूरा आयात उन के मज़ाक़ उड़ाने पर अ़लामत हैं तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उन पर सख़्ती और शिद्दत इख़्तियार करते हुवे फ़रमाया (जिसे क़ुरआने मजीद में इस त़रह़ बयान फ़रमाया गया) :

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ (پ۱۷، الانبیاء: ۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिन को* ***अल्लाह*** *के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं ?*

सख़्ती से मन्अ़ करने वाले पर दो बातों का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है : (1).....सख़्ती से उस वक़्त पेश आए जब नर्मी से फ़ाइदा न हो और (2).....सिर्फ़ सच्ची बात करे और ब क़दरे ह़ाजत कलाम करे।

www.dawateislami.net

क्यूंकि सख़्ती बुराई दूर करने का इलाज है और अगर उस पर सख़्ती करने के लिये उसे "**ऐ फ़ासिक़ ! ऐ अहमक़ ! ऐ बे वुक़ूफ़ !**" कहना पड़े तो ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना हक़ और सच है क्यूंकि फ़ासिक़, अहमक़ और बेवुक़ूफ़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान यक़ीनन फ़ासिक़ है। अगर उस में जहालत, फ़िस्क़ और हमाक़त न होती तो वोह ना फ़रमानी न करता। (हदीसे पाक में है :) "समझदार वोह है जो अपने नफ़्स को ताबेअ़ करे और मौत के बा'द के लिये अ़मल करे।"(1)

सख़्ती से पेश आना भी बुराई को ख़त्म करने वाले त़रीक़ों में से एक त़रीक़ा है।

﴾4﴿.....**बुराई को हाथ से ख़त्म करना :** येह हाकिमे वक़्त की ज़िम्मेदारी है और हाकिमे वक़्त वोह होता है जो गाने बजाने के आलात ख़त्म कर दे, शराब बहा दे, ग़ासिब को छीने हुवे घर से बाहर निकाल दे और उन तमाम तक्लीफ़ देह चीज़ों को दूर कर दे जिन्हें रख कर मुसलमानों के रास्ते तंग कर दिये गए हों।

﴾5﴿.....**मारने या क़त्ल करने की धमकी देना :** येह काम भी मुसलमान बादशाह का है। आ़म लोगों को सिर्फ़ ज़बान से रोकने की इजाज़त है और डराने धमकाने का इख़्तियार सिर्फ़ हाकिमे वक़्त को है और ब वक़्ते ज़रूरत अपनी धमकी को अ़मली जामा भी पहना दे और झूट न बोले और न इस का रो'ब व दबदबा लोगों के दिलों से निकल जाएगा।

﴾6﴿.....**मुजरिम को सज़ा देना या क़त्ल करना :** ऐसा करना सिर्फ़ मुसलमान हुक्मरान के लिये जाइज़ है नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ सब से पहले वोही जवाब देह है और मुस्लिम मुआ़शरे में येह काम बहुत ज़रूरी है।

1 .....جامع الترمذی، ابواب صفة القیامة،باب حدیث الکیّس من دان نفسه.....الخ، الحدیث:۲۴۵۹،ص۱۸۹۹.

www.dawateislami.net

ज़रूरी वज़ाहत : गुज़श्ता ज़मानों में बुराई ख़त्म करने के मज़्कूरा तमाम त़रीक़े अपनाने का हर एक को इख़्तियार था क्यूंकि हर एक इन से आगाह था। जब कि अब बयान कर्दा त़रीक़ों में से आख़िरी तीन त़रीक़ों का इख़्तियार सिर्फ़ हाकिमे वक़्त को ह़ासिल है ताकि मुआ़शरे की अम्नो सलामती में किसी क़िस्म का फ़साद बरपा न हो और हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में से जो शख़्स बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि अपने हाथ से बदल दे। अगर इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता तो ज़बान से बदल दे, अगर इस की भी त़ाक़त नहीं रखता तो दिल में बुरा जाने और येह ईमान का कमज़ोर तरीन दरजा है।"(1)

ह़दीसे पाक की तशरीह़

मज़्कूरा ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इरशाद फ़रमाते हैं : "बुराई को हाथ से दूर करना ह़ाकिमे वक़्त का काम है। ज़बान से दूर करना आ़लिम और उस शख़्स का काम है जो अच्छे त़रीक़े से **नेकी की दा'वत** पेश करने की क़ुदरत रखता हो और दिल से बुरा जानना आ़म मुसलमानों का काम है जो ज़बान (और हाथ) से रोकने पर क़ादिर नहीं।"

एक इश्काल का जवाब

इस पर येह वहम पैदा हो सकता है कि "क्या वालिदैन को बुराई से मन्अ़ करने के लिये अवलाद और यूं ही शोहर को बुराई से मन्अ़ करने के लिये बीवी को मज़्कूरए बाला त़रीक़े इख़्तियार करना जाइज़ है?" तो इस का जवाब येह है कि अवलाद अपने वालिदैन को सिर्फ़ पहले और दूसरे त़रीक़े से मन्अ़ कर सकती है या'नी वालिदैन के सामने बुराई की निशान देही कर दें और अगर उन्हें मा'लूम हो कि येह बुराई है तो उन के

1 ......صحیح المسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون نهی عن المنکرمن......الخ، الحدیث:۱۷۷،ص۲۸۸.

www.dawateislami.net

सामने इस की वईदें बयान करें। अवलाद के लिये उन पर सख़्ती करना, डराना धमकाना या मारना पीटना जाइज़ नहीं। हां ! अगर वोह बुराई की आदत बना लें तो उस (बुराई) को ख़त्म कर दे लेकिन उन की शख़्सिय्यत पर किसी त़रह़ की आंच न आने पाए। मिसाल के त़ौर पर उन की शराब बहा दे उन का छीना या चोरी किया हुवा माल मालिक के ह़वाले कर दे। बुराई से मन्अ़ करने का हुक्म आ़म है मगर वालिदैन को इस से ख़ारिज करने की वज्ह येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें उफ़ तक कहने से मन्अ़ फ़रमाया है। जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन से हूं न कहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना।*

और बीवी के लिये वोही हुक्म है जो अवलाद के लिये बयान किया गया है या'नी शोहर को बुराई से रोकने के लिये मज़्कूरए बाला 6 त़रीक़ों में से पहले दो त़रीक़े इख़्तियार कर सकती है (या'नी बुराई की निशानदेही करना और उस को दूर करने के लिये वा'ज़ो नसीह़त करना)। क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं किसी को (मख़्लूक़ में से) किसी के लिये सजदा करने का हुक्म देता तो बीवी को हुक्म देता कि अपने शोहर को सजदा करे।"(1)

ख़ुलासए कलाम

नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना हर मुसलमान पर तीन शराइत़ के साथ वाजिब है :

﴿1﴾.....**इल्म होना : नेकी की दा'वत** देने वाला नेकी और बुराई को जानता हो क्यूंकि अगर उसे इन दोनों की पहचान नहीं तो उस के लिये नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना दुरुस्त ही नहीं क्यूंकि इस त़रह़ मुमकिन है कि वोह बुराई का हुक्म दे बैठे और नेकी से मन्अ़ कर बैठे।

1 .....جامع الترمذی،ابواب الرضاع،باب ماجاء فی حق الزوج.....الخ،الحدیث:۱۱۵۹،ص۱۷۶۵.

www.dawateislami.net

﴾2﴿......**बड़ी बुराई का अन्देशा न होना :** छोटी बुराई को ख़त्म करने की वज्ह से बड़ी बुराई का अन्देशा न हो। मसलन शराब नोशी से मन्अ़ करने की वज्ह से क़त्लो क़िताल की नोबत आ जाए। लिहाज़ा जब इस बात का अन्देशा हो तो उस के लिये **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना जाइज़ नहीं।

﴾3﴿......**बुराई के ख़ातिमे का ज़न्ने ग़ालिब होना :** उसे इस बात का यक़ीन हो या ज़न्ने ग़ालिब हो कि उस के मन्अ़ करने से बुराई ख़त्म हो जाएगी और **नेकी की दा'वत** देना मुअस्सिर और नफ़्अ़ बख़्श होगा। क्यूंकि अगर उसे मा'लूम न हो या ज़न्ने ग़ालिब न हो तो उस पर **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब नहीं।

पहली और दूसरी शर्त़ जवाज़ के लिये और तीसरी वुजूब के लिये है। पस जब पहली और दूसरी शर्त़ न पाई जाए तो **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना जाइज़ ही नहीं और जब तीसरी शर्त़ न पाई जाए और पहली और दूसरी मौजूद हो तो **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना जाइज़ है, वाजिब नहीं।

कुछ बुराइयां ऐसी हैं जिन्हें ख़त्म करना हर मुसलमान के लिये मुमकिन नहीं होता जैसे ज़ाहिरी बुराइयां। हर शख़्स इन्हें मिटाने पर क़ादिर नहीं होता क्यूंकि इस से अम्नो अमान और निज़ामे आ़लम ख़राब होता और आपस में अ़दावत पैदा होती है। इन को हुक्काम ही ख़त्म कर सकते हैं। लिहाज़ा इस की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर है। चुनान्चे, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ास लोगों के अ़मल की वज्ह से आ़म लोगों को अ़ज़ाब नहीं देगा। हां ! अगर आ़म लोग उन से बुराई को बदलने पर क़ादिर हों फिर भी उन्हें बुराई से मन्अ़ न करें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़म व ख़ास को अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा देगा।"(1)

---

1 ......جامع الاحادیث الکبیر للسیوطی، الحدیث ۵۵۱۲، ج ۲، ص ۲۹۲.

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) फ़रमाते हैं : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्द गिर्द बैठे हुवे थे कि फ़ितने का ज़िक्र हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम लोगों को देखो कि वोह वा'दों का पास छोड़ दें और अमानतों की परवाह न करें।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में डाल कर इरशाद फ़रमाया : "और लोग यूं (गुथ्थम गुथ्था) हो जाएं।" (रावी फ़रमाते हैं) मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान फ़रमाए, उस वक़्त मुझे क्या करना चाहिये ?" इरशाद फ़रमाया : "अपने घर को लाज़िम पकड़ लेना। अपनी ज़बान को क़ाबू में रखना। अच्छी बातों को इख़्तियार करना। बुरी बात को छोड़ देना। अपनी ही इस्लाह़ की फ़िक्र करना और आ़म लोगों का ख़याल तर्क कर देना।"(1)

ह़दीसे पाक की तशरीह़

जब तुम लोगों को देखो कि उन के अ़हदो पैमान ख़राब और अमानतों की त़रफ़ तवज्जोह कम हो जाए। उन का मुआ़मला बिगड़ जाए। अमानत दार और ख़यानत करने वाले के माबैन इम्तियाज़ न हो सके। नेकूकार और बदकार की पहचान न हो सके तो अपने घरों में ठहर जाओ। लोगों के ह़ालात के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू करने से बचो ताकि वोह तुम्हें किसी क़िस्म की तक्लीफ़ न दें। नेकियों पर कमर बस्ता हो जाओ और बुराइयों से मुकम्मल इजतिनाब करो और अपने ख़ास दीनी और दुन्यवी कामों में मश्ग़ूल हो जाओ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान ऐसी ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ है :

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الملاحم،باب الامر والنھی،الحدیث:۴۳۴۳،ص ۱۵۴۰ .

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ (پ۷،المائدۃ:۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।

और हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान भी ऐसी ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ है : "बल्कि **नेकी की दा'वत** दो और बुराई से मन्अ़ करो यहां तक कि जब तुम देखो कि बुख़्ल की इत़ाअ़त और ख़्वाहिश की पैरवी की जा रही है। दुन्या को तरजीह़ दी जा रही है और हर राए वाला अपनी राए पर ख़ुश हो रहा है तो अपनी इस्लाह़ की फ़िक्र करो और आ़म लोगों का ख़याल छोड़ दो।"(1)

क्यूंकि ऐसे ह़ालात में फ़ाइदा न होने की वज्ह से **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना वाजिब नहीं रहता और कभी **नेकी की दा'वत** देने वाले को अज़िय्यत का सामना भी करना पड़ता है लेकिन ऐसे ह़ालात में भी **नेकी की दा'वत** देना मुस्तह़ब है।

नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले के आदाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना एक नेकी का काम है। जब **नेकी की दा'वत** देने वाला इल्म, बुर्दबारी और हुस्ने अख़्लाक़ से मुज़य्यन (مُزَيَّن) हो तो इस से बुराई को मिटाया जा सकता है। पस इस फ़रीज़े को सर अन्जाम देने वाले में दर्जे ज़ैल ख़ूबियों का पाया जाना बेह़द ज़रूरी है :

﴿1﴾.....**ख़ुश अख़्लाक़ होना : नेकी की दा'वत** देने वाला ख़ुश अख़्लाक़ हो। चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया :

1 .....سنن ابن ماجه، ابواب الفتن،باب قوله تعالى يايها الذين امنوا عليكم انفسكم، الحديث:۴۰۱۴،ص ۲۷۱۸.

www.dawateislami.net

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَ لَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَا نْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ ۪ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿۱۵۹﴾

(پ۴،اٰل عمران:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो कैसी कुछ* **अल्लाह** *की मेहरबानी है कि ऐ महबूब ! तुम उन के लिये नर्म दिल हुवे और अगर तुन्द मिज़ाज सख़्त दिल होते तो वोह ज़रूर तुम्हारे गिर्द से परेशान हो जाते तो तुम उन्हें मुआफ़ फ़रमाओ और उन की शफ़ाअत करो और कामों में उन से मश्वरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो* **अल्लाह** *पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले* **अल्लाह** *को प्यारे हैं।*

﴿2﴾.....**बुर्दबार होना : नेकी की दा'वत** देने वाले का बुर्दबार, साहिबे हिक्मत और साबिर होना ज़रूरी है । अगर पहली मरतबा **नेकी की दा'वत** कार आमद न हो तो दूसरी मरतबा पेश करे और नर्मी से काम ले । इस लिये कि जिसे **नेकी की दा'वत** दी जा रही है वोह नफ़्सो शैतान की क़ैद में है। पस न चाहते हुवे भी उस के साथ नर्मी का बरताव करे यहां तक कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से नफ़्सो शैतान पर ग़ालिब और हक़ीक़ी मोमिनीन के हल्क़े में दाख़िल कर दे ।

﴿3﴾.....**इल्म होना : नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले का साहिबे इल्म होना भी ज़रूरी है और ऐसे काम से मन्अ़ करे जिस के मज़मूम होने पर फ़ुक़हा का इत्तिफ़ाक़ हो । अलबत्ता ! फ़रूई मसाइल (या'नी वोह मसाइल जो किसी अ़क़्ली दलील व क़ाइदे के तह्त उसूल से निकाले जाएं) में किसी को भी मन्अ़ करने की इजाज़त नहीं । इस की मिसाल येह है कि एक शख़्स नमाज़े अ़स्र के बा'द नमाज़े मग़रिब के इन्तिज़ार में मस्जिद में बैठा हुवा था । उस वक़्त दूसरा शख़्स मस्जिद में दाख़िल हुवा और दो रक्अ़त नफ़्ल नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद अदा करने लगा जब कि वोह नमाज़े अ़स्र अदा कर चुका था तो पहले शख़्स के लिये जाइज़ नहीं कि उसे नमाज़ से मन्अ़ करे और दलील येह दे कि नमाज़े अ़स्र के

www.dawateislami.net

बा'द नफ़्ल पढ़ना जाइज़ नहीं क्यूंकि नमाज़ पढ़ने वाले की नज़र में वोह नफ़्ल नमाज़ है जिस का एक सबब है (और वोह मस्जिद में दाख़िल होना है)।[1]

इसी त़रह़ कोई शख़्स नमाज़े मग़रिब के इन्तिज़ार में मस्जिद में बैठा हुवा था और एक शख़्स मग़रिब से थोड़ा पहले मस्जिद में दाख़िल हुवा और तह़िय्यतुल मस्जिद अदा किये बिग़ैर बैठ गया तो बैठे हुवे शख़्स के लिये जाइज़ नहीं कि उस पर ए'तिराज़ करे और दो रक्अ़त नमाज़ तह़िय्यतुल मस्जिद अदा करने का मुत़ालबा करे क्यूंकि आने वाले की नज़र में येह जाइज़ नहीं और रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन अवक़ात में नफ़्ल अदा करने से मन्अ़ फ़रमाया है : (1)....त़ुलूए आफ़्ताब के वक़्त (2)....ज़वाल के वक़्त और (3)....ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त।

अगर **नेकी की दा'वत** देने वाला इ़ल्म, तक़्वा और हुस्ने अख़्लाक़ के ज़ेवर से आरास्ता न हो तो वोह बुराई को ख़त्म नहीं कर सकेगा। बल्कि बा'ज़ अवक़ात जब **नेकी की दा'वत** ह़द्दे शरअ़ से बढ़ जाए तो बुराई बन जाती है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जो शख़्स नेकी का हुक्म दे तो उसे चाहिये कि नर्मी व शफ़्क़त से नेकी का हुक्म दे।"[2]

﴿4﴾.....**बा अ़मल होना : नेकी की दा'वत** देने वाले के आदाब में से येह भी है कि वोह ख़ुद नेकियों पर कमर बस्ता हो और बुराइयों से बचने वाला हो। जैसा कि हम ने अभी बयान किया क्यूंकि **नेकी की**

1 .....अह्नाफ़ के नज़्दीक नमाज़े अ़स्र के बा'द नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मन्अ़ है। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 456 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "नमाज़े अ़स्र से आफ़्ताब ज़र्द होने तक नफ़्ल मन्अ़ है, नफ़्ल नमाज़ शुरूअ़ कर के तोड़ दी थी उस की क़ज़ा भी इस वक़्त मन्अ़ है और पढ़ ली तो ना काफ़ी है क़ज़ा उस के ज़िम्मे साक़ित़ न हुई।"

2 .....الجامع الصغیر للسیوطی، حرف المیم، الجزء الثانی، الحدیث: ۸۵۳۱، ص ۵۱۹.

www.dawateislami.net

दा'वत देने से मक़्सूद बुराई को मिटाना और भलाई को फ़ैलाना है। लोग जब **नेकी की दा'वत** देने वाले को बा अ़मल देखेंगे तो उस की पैरवी करेंगे और बुराइयों को तर्क करने में जल्दी करेंगे, और अगर वोह ख़ुद ही बे अ़मल होगा तो लोग उस की बात को कोई अहम्मिय्यत नहीं देंगे और बुराइयों पर क़ाइम रहेंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन ज़ाज़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुझे बताया गया है कि कुछ लोगों को जब जहन्नम में डाला जाएगा तो दोज़ख़ियों को उस की बद बू से सख़्त तक्लीफ़ होगी। उस से कहा जाएगा : "तेरी बरबादी हो, तू क्या करता था? क्या पहले हमें तक्लीफ़ कम थी कि अब हम तेरी बद बू की अज़िय्यत में मुब्तला कर दिये गए हैं?" तो वोह कहेगा : "मैं इ़ल्म रखता था मगर मैं ने अपने इ़ल्म से नफ़्अ़ ह़ासिल न किया।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "अगर तू **नेकी की दा'वत** देने वालों में से है, तो ऐसा हो जा कि जिस की लोग पैरवी करें वरना तू हलाक हो जाएगा।"

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

يَـا اَيُّهَـا الـرَّجُـلُ الْـمُـعَـلِّمُ غَيْـرَهُ هَلَّا لِـنَـفْسِكَ كَـانَ ذَا التَّـعْـلِيْـمُ
تَـصِفُ الـدَّوَاءَ لِـذِى السِّـقَامِ وَذِى الضَّنَا وَمِـنَ الـضَّـنَـا وَالـدَّاءِ اَنْـتَ سَقِيْمُ
اِبْـدَاْ بِـنَـفْسِكَ فَـانْهَهَـا عَـنْ غَيِّهَـا فَـاِذَا انْتَهَـتْ عَـنْـهُ فَـاَنْتَ حَكِيْمُ
فَهُنَـاكَ يُـقْبَـلُ مَـا وَعَـظْـتَ وَيُقْتَدٰى بِـالْـعِـلْـمِ مِـنْكَ وَيَـنْـفَـعُ التَّـعْلِيْمُ

तर्जमा : (1).....ऐ दूसरे को ता'लीम देने वाले तू ने अपने आप को ता'लीम क्यूं न दी?

(2).....तू दूसरे बीमारों के लिये दवा तजवीज़ करता है ह़ालांकि तू ख़ुद बीमार है।

(3).....अपने नफ़्स से इब्तिदा कर इसे सरकशी से मन्अ़ कर अगर येह सरकशी से बाज़ आ गया तो तू साहिबे ह़िक्मत है।

(4).....फिर तेरी नसीह़त क़बूल की जाएगी तेरे इ़ल्म की इक़्तिदा की जाएगी और तेरा समझाना फ़ाइदा देगा।

www.dawateislami.net

《5》......**साबिर होना : नेकी की दा'वत** देने वाले को सब्रो इस्तिक़लाल वाला होना चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल बयान करते हुवे सब्र को **नेकी की दा'वत** के साथ मिला दिया है। चुनान्चे, क़ुरआने पाक में है :

يٰبُنَیَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ (پ ۲۱، لقمٰن:۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ बरपा रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ कर और जो इफ़्ताद तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर।*

सब्रो तह़म्मुल की आ'ला मिसाल

एक बुज़ुर्ग के बारे में मन्क़ूल है कि वोह एक ताजिर के पास खड़े हो कर उसे **नेकी की दा'वत** दे रहे थे और उसे ऐसे मह़ल्ले में मस्जिद बनाने के लिये सदक़ा व ख़ैरात करने पर उभार रहे थे जहां मस्जिद की ज़रूरत थी मगर उस ने बुज़ुर्ग से तआवुन करने के बजाए उन्हें गालियां दीं और उन के चेहरे पर थूकते हुवे कहा : "तुम लोग अपने लिये माल जम्अ़ करते हो और सह़ीह़ मसरफ़ (या'नी ख़र्च करने की जगह) में इस्ति'माल नहीं करते।" उस नेक शख़्स ने अपने चेहरे से थूक साफ़ करते हुवे कहा : "तुम ने जो कुछ मेरे साथ किया मैं ने अपनी ज़ात के लिये इसे क़बूल किया लेकिन मैं मस्जिद बनाने के लिये फ़ी सबीलिल्लाह तुम से सुवाल कर रहा हूं।" येह सुन कर उसे नदामत व शर्मिन्दगी हुई और अपनी थैली में हाथ डाल कर वाफ़िर मिक़्दार में माल निकाला और अपने फ़े'ल पर मा'ज़िरत करते हुवे वोह माल उन के ह़वाले कर दिया।

अगर **नेकी की दा'वत** देने वाले बुज़ुर्ग सब्रो तह़म्मुल से काम न लेते और ताजिर की त़रफ़ से अज़िय्यत को बरदाश्त न करते तो उन से मा'ज़िरत न की जाती और न ही वोह चन्दा ह़ासिल करने में कामयाब होते।

《6》......**ह़रीस न होना : नेकी की दा'वत** देने वाले के लिये ज़रूरी है कि जिस को दा'वत दे रहा है उस के माल में लालच न करे ह़त्ता कि उस की चापलूसी भी न करे और यूं ही वोह **नेकी की दा'वत** देने और नसीह़त

www.dawateislami.net

करने में जुरअत मन्द हो। और अगर वोह लोगों के मालो दौलत की ह़िर्स करेगा तो उन्हें वा'ज़ो नसीह़त न कर सकेगा।

﴾7﴿......**झूटी ता'रीफ़ करने वाला न होना :** लोगों की ख़ुशामद करने की आ़दत न हो। इस लिये कि जिस में येह चीज़ पाई जाती है उस के लिये **नेकी की दा'वत** देना और बुराई से मन्अ़ करना मुश्किल हो जाता है। इसी वज्ह से सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "अगर बिल फ़र्ज़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का कोई मुआ़मला हो तब भी ह़क़ का साथ न छोड़ा जाए।"

﴾8﴿......**नर्म ख़ू होना : नेकी की दा'वत** देने वाले के लिये ज़रूरी है कि वोह वा'ज़ो नसीह़त करने में नर्मी करने वाला हो। हम अभी बयान कर आए हैं कि **नेकी की दा'वत** का अहम तरीन मक़्सद मामूर (या'नी जिसे **नेकी की दा'वत** दी जा रही है उस) को शैत़ान की क़ैद से आज़ाद कराना है और जो इस दूर अन्देशी को मद्दे नज़र रखता है वोह मामूर के साथ नर्मी से पेश आता है और उसे सख़्ती व दुरुश्ती के बिग़ैर नसीह़त करता है।

नर्म मिज़ाजी के मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायत

मन्क़ूल है कि मामूनुर्रशीद को किसी ने नसीह़त की और सख़्ती से पेश आया तो मामूनुर्रशीद ने कहा : ऐ शख़्स ! नर्मी इख़्तियार कर कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से बेहतर (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को मुझ से बदतर (या'नी फ़िरऔ़न) के पास भेजा तो नर्मी से पेश आने का हुक्म दिया। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّیِّنًا لَّعَلَّهٗ یَتَذَكَّرُ اَوْ یَخْشٰى ﴿۴۴﴾ (پ ۱۶، طٰہٰ: ۴۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस से नर्म बात कहना इस उम्मीद पर कि वोह ध्यान करे या कुछ डरे।*

पस ऐ **नेकी की दा'वत देने वाले** ! नर्मी इख़्तियार कर और हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ को अपने ऊपर लाज़िम कर ले। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

बुराई से मन्अ़ करने का बेहतरीन अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "एक अन्सारी नौजवान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ज़िना की इजाज़त दीजिये ।" लोग उस की त़रफ़ बढ़े और डांट डपट करते हुवे कहा : "बाज़ आ जा ! बाज़ आ जा !" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसे मेरे पास लाओ ।" वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब हो कर बैठ गया । मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या अपनी मां के ह़क़ में येह (या'नी ज़िना) पसन्द करते हो ?" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं येह पसन्द नहीं करता ।" इरशाद फ़रमाया : "लोग भी अपनी मां के ह़क़ में इसे ना पसन्द करते हैं ।" फिर इरशाद फ़रमाया : "क्या अपनी बेटी के ह़क़ में पसन्द करते हो ?" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान फ़रमाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं ।" इरशाद फ़रमाया : "लोग भी अपनी बेटियों के ह़क़ में इसे ना पसन्द करते हैं ।" फिर पूछा : "क्या अपनी बहन के ह़क़ में पसन्द करते हो ?" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं ।" इरशाद फ़रमाया : "लोग भी अपनी बहनों के ह़क़ में इसे पसन्द नहीं करते ।" फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या अपनी फूफी के ह़क़ में पसन्द करते हो ?" अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं ।" इरशाद फ़रमाया : "लोग भी अपनी फूफियों के

www.dawateislami.net

हक़ में इसे ना पसन्द करते हैं।" फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या अपनी ख़ाला के हक़ में पसन्द करते हो?" अ़र्ज़ की : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान फ़रमाए, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हरगिज़ नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "लोग भी अपनी ख़ालाओं के हक़ में इसे ना पसन्द करते हैं।" फिर हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते अक़्दस उस के सीने पर रखा और दुआ फ़रमाई : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस का दिल सुथरा फ़रमा। इस के गुनाह मुआफ़ फ़रमा और इस की शर्मगाह की हिफ़ाज़त फ़रमा। इस के बा'द वोह नौजवान कभी किसी गुनाह की त़रफ़ माइल न हुवा।"(1)

﴿9﴾.....**तन्हाई में समझाने वाला होना : नेकी की दा'वत** के आदाब में से येह भी है कि वा'ज़ो नसीह़त, नासेह़ (या'नी नसीह़त करने वाले) और मन्सूह़ (या'नी जिसे नसीह़त की जाए) के दरमियान राज़ रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : "जिस ने अपने भाई को अ़लाहिदगी में नसीह़त की उस ने उस की इस्लाह़ की और उसे मुज़य्यन किया और जिस ने उसे सब के सामने नसीह़त की उस ने उसे ज़लीलो रुस्वा किया।" तन्हाई में नसीह़त करना नर्मी की एक क़िस्म है।

बुराइयों की अक़्साम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुन्यादी त़ौर पर बुराइयों की दो अक़्साम हैं :

(1).....**मकरूह बुराइयां :** येह इस दरजे की हैं कि इन से मन्अ़ करना मुस्तह़ब और ख़ामोशी इख़्तियार करना मकरूह है, ह़राम नहीं। हां ! अगर इन के मुर्तकिब को मा'लूम न हो कि येह मकरूह है तो उसे बता देना ज़रूरी है।

1 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابى امامة الباهلى، الحديث: ٢٢٢٧٤، ج٨، ص٢٨٥.

www.dawateislami.net

(2).....**हराम बुराइयां :** इन पर ख़ामोशी इख़्तियार करना ह़राम और इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ मन्अ़ करना फ़र्ज़ है । मुख़्तलिफ़ मक़ामात व मवाक़ेअ़ पर होने वाली बुराइयां दर्जे ज़ैल हैं :

﴾1﴿.....मसाजिद में होने वाली बुराइयां

मसाजिद में ज़ियादा तर येह बुराइयां होती हैं :

(1).....**नमाज़ ज़ाएअ़ करना :** या'नी ता'दीले अरकान न करना ।[1] अक्सर फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तो ह़दीस की रू से ऐसी नमाज़ को बात़िल क़रार दिया है । जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने (ह़दीसे पाक को कमाले सलात की नफ़ी पर मह़मूल करते हुवे ऐसी नमाज़ को) मकरूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा क़रार दिया है और अपनी नमाज़ को ज़ाएअ़ करने वाले (या'नी जल्दी जल्दी पढ़ने वाले) शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर ह़दीस है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे इरशाद फ़रमाया : "लौट जा और दोबारा नमाज़ अदा कर क्यूंकि तू ने नमाज़ पढ़ी ही नहीं ।"[2]

लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ में जल्दी करने वाले को देखे तो उस पर लाज़िम है कि उसे मह़ब्बत व शफ़्क़त के साथ समझाए जैसा कि मा'लूम हो चुका है ।

(2).....**ग़लत़ क़िराअत करना :** या'नी क़ुरआने पाक को क़िराअत के क़वाइ़द के ख़िलाफ़ पढ़ना । इस से मन्अ़ करना और सह़ीह़ अन्दाज़ में पढ़ने की तल्क़ीन करना वाजिब है । पस जो शख़्स अक्सर क़ुरआने पाक ग़लत़ पढ़ता है अगर वोह सह़ीह़ क़िराअत सीखने पर क़ादिर है तो

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 518 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "ता'दीले अरकान (येह है कि) रुकूअ़ व सुजूद व क़ौमा और जल्से में कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की क़दर ठहरना ।"

2.....صحيح البخاری، كتاب الاذان، باب وجوب القرأة للامام.....الخ، الحديث: ۷۵۷، ص ۲۰ .

www.dawateislami.net

जब तक सह़ीह़ त़रह़ से पढ़ना सीख नहीं लेता उस वक़्त तक क़िराअत न करे। क्यूंकि इस त़रह़ तो वोह गुनहगार होता रहेगा और अगर उस की ज़बान उस का साथ नहीं देती (या'नी अल्फ़ाज़ उस की ज़बान पर सह़ीह़ त़ौर पर जारी नहीं होते) तो वोह फ़ातिह़ा शरीफ़ और छोटी सूरतें सीखने की पूरी कोशिश करे। अगर उस की अक्सर क़िराअत दुरुस्त है मगर ख़ूब सूरत अन्दाज़ में नहीं पढ़ सकता तो उस के क़ुरआन पढ़ने में कोई ह़रज नहीं। लेकिन उसे चाहिये कि आहिस्ता आवाज़ में क़िराअत करे ताकि दूसरे न सुनें।

(3).....**क़िस्सा गो मुक़र्रिरीन का वा'ज़ करना :** मसाजिद में ऐसे क़िस्सा गो और वाइ़ज़ीन का कलाम करना जो ख़िलाफ़े शरअ़ बातें करते हों। लिहाज़ा दर्स देने वाला अगर झूटी और ग़लत़ बातें बयान करे तो वोह फ़ासिक़ है और उसे मन्अ़ करना वाजिब है और ऐसा बिदअ़ती व बद मज़हब जो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात में ना ज़ेबा कलिमात कहता हो उसे मन्अ़ करना वाजिब और उस की महफ़िल में जाना जाइज़ नहीं। हां! अगर उस का रद्द करना मक़्सूद हो तो जाना जाइज़ है (लेकिन येह उ़लमा का काम है)।

मस्जिद में वा'ज़ो नसीह़त करने वालों को इजाज़त देने से पहले उन की ह़क़ीक़ते ह़ाल से बा ख़बर हो लेना ज़रूरी है (कि कहीं वोह बद मज़हब तो नहीं)। वा'ज़ो नसीह़त करने की इजाज़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हुक्काम की त़रफ़ से मुतसव्वर होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तो उस वक़्त तक इजाज़त बाक़ी है जब तक वा'ज़ करने वाला क़ुरआनो ह़दीस के दाइरे में रहे और अगर क़ुरआनो ह़दीस के दाइरे से बाहर हो जाए और ख़िलाफ़े शरअ़ बातें बयान करने लगे तो अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से उसे वा'ज़ करने की इजाज़त बाक़ी न रहेगी अगर्चे हुक्काम की जानिब से मन्अ़ न किया जाए और हुक्काम से इजाज़त लेना अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के अ़मल से मा'लूम होता है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का इल्मी मक़ाम

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم बसरा की मस्जिद में दाख़िल हुवे तो लोग ह़ल्क़ों की सूरत में क़िस्सा गोई कर रहे थे। जब आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ह़क़ीक़ते ह़ाल से बा ख़बर हुवे तो उन को वहां से भगा दिया। यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के ह़ल्क़े में तशरीफ़ ले गए उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जवानी के आ़लम में थे। अमीरुल मोमिनीन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने पूछा : "ऐ नौजवान ! दीन की बुन्याद किस चीज़ पर है ?" अ़र्ज़ की : "तक़्वा व परहेज़गारी पर।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दोबारा पूछा : "कौन सी चीज़ दीन में आफ़त है ?" अ़र्ज़ की : "त़म्अ़ व लालच।" तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन्हें बिठा दिया और फ़रमाया : "तुम जैसे लोग ही वा'ज़ो नसीह़त करने के ह़क़दार हैं।"

(4)......**मसाजिद में मर्दों-औ़रतों का इकट्ठा होना :** अगर मस्जिद में मर्दों और औ़रतों का इजतिमाअ़ हो तो इन के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल करना वाजिब है ताकि इन की एक दूसरे पर नज़र न पड़े क्यूंकि यहां फ़ितना व फ़साद का अन्देशा है। यहां तक कि अगर कोई आ़लिम औ़रतों को वा'ज़ो नसीह़त करे तो उस के और औ़रतों के दरमियान भी कोई चीज़ ह़ाइल करना वाजिब है, इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येही पसन्द है।(1)

---

(1)......मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "औ़रतें नमाज़े मस्जिद से ममनूअ़ हैं और वाइ़ज़ (या'नी वा'ज़ करने वाला) या मीलाद ख़्वां अगर आ़लिम सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो और उस का वा'ज़ो बयान सह़ीह़ व मुत़ाबिक़े शरअ़ हो और (औ़रत की आने) जाने में पूरी एह़तियात़ और कामिल पर्दा हो और कोई एह़तिमाले फ़ितना (या'नी फ़ितने का ख़ौफ़) न हो और मजलिसे रिजाल (या'नी मर्दों की बैठक) से दूर (जहां एक दूसरे पर नज़र न पड़ती हो) उन की निशस्त हो तो ह़रज नहीं।"

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 239, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहौर)

www.dawateislami.net

(5).....**कुरआने पाक का एह़तिराम न करना :** बा'ज़ लोग कुरआने पाक को ज़मीन पर रख देते हैं जो पाउं रखने की जगह है या सजदा करने की जगह पर रख देते हैं जो इस लिये है कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर अपने ह़क़ीर होने का इज़हार करे और अपने जिस्म का अफ़ज़ल ह़िस्सा या'नी पेशानी क़दम रखने की जगह पर रख दे, क्यूंकि कुरआने पाक रखने का मक़ाम ज़मीन नहीं बल्कि इसे बुलन्द जगह पर रखना और इस की ता'ज़ीमो तौक़ीर करना ज़रूरी है। और जो इस की ता'ज़ीम न करे उसे मह़ब्बत व शफ़क़त से समझाना ज़रूरी है।

(6).....**पागलों और आलूदा बच्चों को मस्जिद में लाना :** समझदार बच्चे के मस्जिद में दाख़िल होने में कोई ह़रज नहीं जब कि वोह खेल कूद न करे। अगर्चे बच्चे का मस्जिद में खेलना ह़राम नहीं और उसे न रोकना भी ह़राम नहीं, लेकिन अगर बच्चे मस्जिद को खेल कूद का मैदान बना लें और इन्हें मस्जिद में खेलने की आ़दत पड़ जाए तो मन्अ़ करना वाजिब है। छोटे बच्चों का मस्जिद में थोड़ा बहुत खेलना जाइज़ है मगर ज़ियादा खेलना ममनूअ़ है। थोड़ा बहुत खेलने के जाइज़ होने की दलील येह ह़दीसे मुबारका है कि एक मरतबा ईद के मौक़अ़ पर सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के सामने खड़े हो गए और उन्हों ने ह़बशियों का खेल मुलाह़ज़ा फ़रमाया जो मस्जिद में रक़्स कर रहे थे और नेज़ों और ढालों के साथ खेल रहे थे।''(1)

अगर ह़बशी मस्जिद को खेल कूद का मैदान बना लेते तो उन्हें ज़रूर मन्अ़ कर दिया जाता।

पागल शख़्स जब मस्जिद में सुकून से बैठा हो तो उसे मस्जिद से निकालना वाजिब नहीं। मगर जब उस से मस्जिद आलूदा होने, उस के गाली गलोच या बद कलामी करने या उस की बे पर्दगी होने का ख़ौफ़ हो

1 .....صحیح البخاری، کتاب العیدین، باب الحراب و الدرق یوم العید، الحدیث: ۹۵۰، ص ۷۴، مفهومًا.

www.dawateislami.net

तो इस सूरत में उसे मस्जिद से निकालना वाजिब है।[1]

(7).....बदबू दार जिस्म या कपड़ों के साथ मस्जिद में आना : काम काज करने वाले बा'ज़ लोग बदबू दार कपड़ों के साथ मसाजिद में दाख़िल हो जाते हैं और यूं ही अज़िय्यत नाक बू वाले मछली फ़रोश, नमाज़ियों को तक्लीफ़ पहुंचाते, मस्जिद का फ़र्श गन्दा करते और नमाज़ियों की कमी का बाइस बनते हैं। ऐसे लोगों पर वाजिब है कि बदबू दार कपड़े उतारें और पाक व साफ़ लिबास पहन कर मस्जिद में आएं। क्यूंकि मस्जिदें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का घर हैं, इन्हें साफ़ सुथरा और ख़ुश्बू दार रखना और तक्लीफ़ देह चीज़ बाहर निकालना वाजिब है।

1.....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मदनी फूलों के एक पम्फ़ेलेट की तह़रीर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

बच्चे को मस्जिद में लाने की ह़दीस में मुमानअ़त है

सुल्त़ाने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मस्जिदों को बच्चों और पागलों और ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े और आवाज़ बुलन्द करने और हुदूद क़ाइम करने और तल्वार खींचने से बचाओ।" (ابن ماجة، ج ۱، ص ۴۱۵، حديث ۷۵۰)

ऐसा बच्चा जिस से नजासत (या'नी पेशाब वग़ैरा कर देने) का ख़त़रा हो और पागल को मस्जिद के अन्दर ले जाना ह़राम है अगर नजासत का ख़त़रा न हो तो मकरूह। जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को इस का ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो साफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना बे अदबी है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 3, स. 92)

मस्जिद में बच्चा या पागल (या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस) को मस्जिद में दम करवाने के लिये भी लाने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। बच्चे को अच्छी त़रह़ कपड़े में लपेट कर भी नहीं ला सकते। अगर आप बच्चे वग़ैरा को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं तो बराहे करम फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा न लाने का अ़ह्द कीजिये। (जो ऐसे वक़्त पर्चा पढ़े कि बच्चा उस के साथ है तो दरख़्वास्त है कि फ़ौरन बच्चे को मस्जिद से बाहर ले जाए और तौबा भी करे हां फ़िनाए मस्जिद में बच्चे को ला सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से न गुज़रना पड़े।)

www.dawateislami.net

लिहाज़ा अगर कोई शख़्स गन्दे और बदबू दार कपड़े पहन कर मस्जिद में आए तो उसे हुक्मे शरई बता दिया जाए। फिर ऐसा करे तो वा'ज़ो नसीहत की जाए। इस के बा वुजूद वोही कपड़े पहन कर आए तो सख़्ती की जाए। फिर भी बाज़ न आए तो मस्जिद से निकाल दिया जाए। जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लहसन खाने वाले को मस्जिद के क़रीब आने से भी मन्अ़ फ़रमाया। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बयान है : "जिस ने लहसन या प्याज़ खाया वोह हम से दूर हो जाए या फ़रमाया हमारी मस्जिदों से दूर हो जाए और अपने घर में बैठा रहे।"(1)

हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : "जिस ने प्याज़, लहसन और गन्दना(2) खाया वोह हरगिज़ हमारी मस्जिदों के क़रीब न आए। क्यूंकि जिस चीज़ से इन्सानों को तक्लीफ़ होती है उस से फ़िरिश्तों को भी अज़िय्यत होती है।"(3)

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने प्याज़, लहसन, गन्दना और मूली खाई, वोह हरगिज़ हमारी मसाजिद के क़रीब न आए। क्यूंकि जिन चीज़ों से इब्ने आदम को तक्लीफ़ होती है उन से फ़िरिश्तों को भी तक्लीफ़ होती है।"(4)

जब लहसन, प्याज़, मूली और गन्दना (या'नी तेज़ बू वाली सब्ज़ी) खाने वाले को मस्जिद में आने से मन्अ़ कर दिया गया ह़ालांकि इन की बदबू सिर्फ़ डकार के वक़्त महसूस होती है तो ऐसा शख़्स जिस से मुसलसल मछली, तेल या चर्बी की बू आ रही हो तो उस के लिये इस से भी सख़्त हुक्म होगा।

---

1 .....صحيح مسلم، كتاب الصلوة، باب نهى من اكل ثوما او بصلا او كراثا.....الخ، الحديث: ۱۲۵۳، ص ۷۶۴.

2 .....गन्दना एक तरकारी का नाम जो लहसन (या'नी थूम) से मुशाबह होता है। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 1168)

3 .....صحيح مسلم، كتاب الصلوة، باب نهى من اكل ثوما او بصلا او كراثا.....الخ، الحديث: ۱۲۵۴، ص ۷۶۴.

4 .....المعجم الصغير للطبراني، باب الالف من اسمه احمد، الحديث: ۳۷، ج ۱، ص ۲۲.

www.dawateislami.net

(8).....**मसाजिद को बाज़ार बना लेना :** मसाजिद को ख़रीदो फ़रोख़्त की जगह बना लेना भी जाइज़ नहीं जब कि मस्जिद नमाज़ियों पर तंग हो जाए और उन्हें नमाज़ पढ़ने में दुश्वारी हो। हां ! अगर इस से कोई शरई ख़राबी लाज़िम न आए तो ह़राम नहीं[1] लेकिन फिर भी ऐसा न करना बेहतर है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي ने मसाजिद में ख़रीदो फ़रोख़्त की इजाज़त को मख़्सूस अय्याम और अवक़ात के साथ मशरूत़ किया और फ़रमाया : "मस्जिद को मुस्तक़िल ख़रीदो फ़रोख़्त की जगह बना लेना ह़राम और इस से मन्अ़ करना वाजिब है।"

(2)..... बाज़ारों में होने वाली बुराइयां

बाज़ारों में ज़ियादा तर दर्जे ज़ैल बुराइयां होती हैं :

(1).....ख़रीदो फ़रोख़्त में झूट बोलने और अपनी चीज़ के ऐब छुपाने की बुराई आ़म हो चुकी है। इस की मिसाल येह है कि अगर कोई शख़्स कहे : "मैं ने ज़मीन का येह टुकड़ा दस दिरहम में ख़रीदा है और इस में इतना नफ़्अ़ ले रहा हूं।" ह़ालांकि वोह ग़लत़ बयानी से काम ले रहा है तो ऐसा शख़्स फ़ासिक़ है और जिसे इस की इस ग़लत़ बयानी और धोका देही का इ़ल्म हो तो उस पर वाजिब है कि ख़रीदार को उस के झूट की ख़बर दे। अगर उस ने बेचने वाले की रिआ़यत करते हुवे ख़ामोशी इख़्तियार की तो ख़यानत के जुर्म में उस का शरीक होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान कहलाएगा और इसी त़रह़ अगर उसे बेची जाने वाली चीज़ में मौजूद ऐब का इ़ल्म है तो उस पर लाज़िम है कि ख़रीदार को इस से आगाह करे। अगर उस ने आगाह न किया तो वोह मुसलमान भाई का

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 648 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : "बैअ़ व शरा वग़ैरा हर अ़क़्दे मुबादला मस्जिद में मन्अ़ है, सिर्फ़ मो'तकिफ़ को इजाज़त है जब कि तिजारत के लिये ख़रीदता बेचता न हो, बल्कि अपनी और बाल बच्चों की ज़रूरत से हो और वोह शै मस्जिद में न लाई गई हो।"

www.dawateislami.net

माल ज़ाएअ़ करने पर राज़ी शुमार होगा और येह ह़राम है और ह़क़ से ख़ामोशी इख़्तियार करने वाला गूंगा शैत़ान है।

(2).....आलाते मूसीक़ी (مُوسِیقِی) की ख़रीदो फ़रोख़्त मसलन सारंगी और गाने बाजे के दीगर आलात ख़रीदना।

(3).....जानदारों की तसावीर की ख़रीदो फ़रोख़्त। जैसे ह़ैवानात की मुनक़्क़श तसावीर और इन्सानों की तसावीर जैसे अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام वग़ैरा की तस्वीरें जो घरों में फ़िरिश्तगाने रह़मत के दाख़िल होने से मानेअ़ हैं।

(4).....शत़रन्ज, ताश और (नशा आवर) सिगरेट की ख़रीदो फ़रोख़्त।

(5).....ऐसे रेशमी मल्बूसात की ख़रीदो फ़रोख़्त जो सिर्फ़ मर्द पहनते हों।

(6).....ऐसे ज़ेवरात की ख़रीदो फ़रोख़्त जो फ़क़त़ मर्दों के लिये तय्यार किये जाते हैं और वोही इन्हें पहनते हैं।

(7).....सजावट के लिये मेज़ों पर रखे जाने वाले जानदारों की तसावीर वाले गुलदान बनाना जैसे महंगे तह़ाइफ़ वग़ैरा।

(8).....नाजाइज़ ख़रीदो फ़रोख़्त करना मसलन कोई चीज़ ख़रीद कर उस पर क़ब्ज़ा करने से पहले उसे बेच देना।

﴾3﴿..... रास्तों में होने वाली बुराइयां

रास्तों में आ़म तौ़र पर येह बुराइयां होती हैं :

(1).....गुज़रने वालों पर रास्ता तंग कर देना जैसे रास्ते में दरख़्त लगा देना। हां ! अगर इस त़रह़ दरख़्त बोए जाएं कि काफ़ी रास्ता ख़ाली हो तो कोई ह़रज नहीं। यूं ही रास्तों पर गन्दगी डाल देना जिस से गुज़रने वालों को तक्लीफ़ हो और उन का नुक़्सान हो और मुद्दते दराज़ तक इमारतों का मलबा सड़क पर रहने देना।

(2).....रास्तों को ख़रीदो फ़रोख़्त के लिये तिजारत गाह बना लेना और सामान रख देना।

www.dawateislami.net

चबूतरा मिस्मार कर दिया

जैसा कि एक मरतबा मौसिमे सर्मा में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठे हुवे थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से गुज़रे। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उ़म्र रसीदा और नाबीना हो चुके थे और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा : "तुम ने येह क्या किया हुवा है? क्या मुसलमानों पर रास्ता तंग करना चाहते हो?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं तो ऐसे ही बैठता हूं जैसे इस मौसिम में दस्तूर है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं वापसी पर तुम्हें यहां बैठा न देखूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरा बेटा आ जाए तो उठ जाता हूं।" इरशाद फ़रमाया : "अभी और इसी वक़्त उठ जाओ।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थोड़ा आगे जा कर एक कोने में खड़े हो गए और देखने लगे कि अबू सुफ़्यान क्या करते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसी वक़्त खड़े हुवे और चबूतरे को तोड़ना शुरूअ़ कर दिया और तोड़ फोड़ कर दूर फेंक दिया। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप से मुख़ातब हो कर फ़रमाने लगे : "उ़मर बिन ख़त्ताब ने सरदारे क़ुरैश अबू सुफ़्यान को हुक्म दिया तो उस ने मान लिया। ऐ उ़मर! येह सिर्फ़ इस्लाम की बरकत है।"

(3).....इन बुराइयों में से एक येह भी है कि क़स्साब (या'नी गोश्त फ़रोश) ह़ज़रात अपनी दुकानों के सामने जानवरों को ज़ब्ह़ कर डालते हैं तो ख़ून और नजासत से लोगों को तक्लीफ़ होती है, उन के लिये वहां से गुज़रना दुश्वार हो जाता और उन पर रास्ता तंग हो जाता है और ऐसा अक्सर देहातों में होता है।

www.dawateislami.net

(4).....बा'ज़ अवक़ात ख़ुसूसन मौसिमे सर्मा में घरों में से सड़कों पर पानी निकाल दिया जाता है और कभी पानी सड़क पर जम जाता है जिस से गुज़रने वाले फिसलते और गिरते रहते हैं।

(5).....सड़कों पर नौजवान लड़के और लड़कियां एक साथ घूमते फिरते हैं और एक दूसरे से ख़ूब गप शप करते हैं जिस से औ़रतों के फ़ितने ज़ाहिर होते हैं और मर्दों को फ़ितनों में मुब्तला करने के लिये औ़रतें अपने जिस्म की नुमाइश करती हैं और येह चीज़ इन्सान को बुराई पर दिलैर करती है जब कि दीने ह़नीफ़ इन तमाम बातों से सख़्ती के साथ मन्अ़ करता है।

﴾4﴿..... शादी व ख़ुशी के मौक़अ़ पर होने वाली बुराइयां

शादी बियाह और दीगर ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर उ़मूमन दर्जे ज़ैल बुराइयों का इर्तिकाब किया जाता है :

(1).....ऐसे मवाक़ेअ़ पर मर्दों के लिये रेशम के क़ालीन बिछाए जाते हैं और येह ह़राम है। मगर औ़रतों के लिये इन का इस्ति'माल जाइज़ है।

(2).....सोने-चांदी की अंगेठी वग़ैरा से धूनी लेना या मशरूबात के लिये मर्दों और औ़रतों का सोने-चांदी के बरतन इस्ति'माल करना (और येह मुत़लक़न मन्अ़ है)।

(3).....ऐसे पर्दों का इस्ति'माल आ़म है जिन पर जानदारों की तसावीर मुनक़्क़श की होती हैं। इसी त़रह़ ऐसी कुर्सियां बिछाई जाती हैं जिन पर जानदारों की तस्वीरें कन्दा होती हैं।

(4).....(ऐसी मह़ाफ़िल में) मूसीक़ी और गाने-बाजे दिलचस्पी से सुने जाते हैं। मर्दों और औ़रतों का इख़्तिलात़ आ़म होता है। लिहाज़ा जो शख़्स बुराई को ख़त्म करने से आ़जिज़ हो उस पर वहां से चले जाना ज़रूरी है और उसे वहां बैठ कर बुराइयां देखने की क़त़्अ़न इजाज़त नहीं।[1]

1.....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 35 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "दा'वत में जाना उस वक़्त सुन्नत है जब मा'लूम हो कि वहां गाना-बाजा, लह्वो लअ़ब नहीं है और अगर मा'लूम है कि येह ख़ुराफ़ात वहां हैं तो न जाए। (बक़ाया ह़ाशिय्या अगले सफ़ह़ा पर).....

www.dawateislami.net

(5).....ज़मीन पर बिछाए जाने वाले क़ालीन या कुर्सियों और तक्यों पर डाले जाने वाले कवर अगर तस्वीरों वाले हों तो इन के इस्ति'माल में कोई ह़रज नहीं और येही हुक्म आ़म तस्वीरों वाले इस्ति'माली बरतनों का है। मगर इन का तज़ईन व आराइश के लिये रखना जाइज़ नहीं।

(6).....ऐसे बरतन कि जिन को किसी ज़ी रूह़ की सूरत पर तय्यार किया गया हो। मसलन ऐसी अंगेठी जिस का ऊपरी ह़िस्सा परन्दे की शक्ल की त़रह़ होता है ऐसे बरतनों का इस्ति'माल ह़राम है और इन के ऊपरी ह़िस्से को तोड़ना वाजिब है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास आए और कहा : "गुज़श्ता रात मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुवा तो आप के दरवाज़ए अक़्दस पर और दौलत ख़ाने के अन्दर लटके हुवे पर्दों पर तस्वीरें थीं और काशानए अत़हर में कुत्ता मौजूद था। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुक्म फ़रमाइये कि घर में मौजूद तस्वीरों के सर काट दिये जाएं ताकि वोह दरख़्तों की त़रह़ हो जाएं और पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ हुक्म दीजिये कि इन्हें काट कर दो तक्ये बना लिये जाएं ताकि वोह (तस्वीरें) पाउं से रौंदी जाएं और कुत्ते को घर से निकलवा दीजिये।"[1]

(अगले सफ़ह़ा का बक़ाया ह़ाशिय्या).....जाने के बा'द मा'लूम हुवा कि यहां लग़्विय्यात हैं, अगर वहीं येह चीज़ें हों तो वापस आए और अगर मकान के दूसरे ह़िस्से में हैं जिस जगह खाना खिलाया जाता है वहां नहीं हैं तो वहां बैठ सकता है और खा सकता है। फिर अगर येह शख़्स उन लोगों को रोक सकता है तो रोक दे और अगर इस की क़ुदरत इसे न हो तो सब्र करे। येह उस सूरत में है कि येह शख़्स मज़हबी पेश्वा न हो और अगर मुक़्तदा व पेश्वा हो, मसलन उ़लमा व मशाइख़, येह अगर न रोक सकते हों तो वहां से चले आएं, न वहां बैठे, न खाना खाएं और पहले ही से येह मा'लूम हो कि वहां येह चीज़ें हैं तो मुक़्तदा हो या न हो किसी को जाना जाइज़ नहीं अगर्चे ख़ास इस ह़िस्सए मकान में येह चीज़ें न हों बल्कि दूसरे ह़िस्से में हों।"

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب فی الصور، الحدیث: ۴۱۵۸، ص ۱۵۲۶.

www.dawateislami.net

(7).....ख़ुशी के मवाक़ेअ़ पर होने वाली बुराइयों में से एक येह भी है कि ऐसे मौक़अ़ पर चौसर (या'नी नर्द शीर)[1], शत़रन्ज और ताश वग़ैरा ख़ेलने का भी एहतिमाम किया जाता है और चौसर खेलना गुनाह है।

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : "जिस ने चौसर का खेल खेला गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में रंगा।"[2]

एक रिवायत में है : "गोया उस ने अपना हाथ ख़िन्ज़ीर के गोश्त और ख़ून में डाला।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ बयान है : "जिस ने चौसर का खेल खेला तह़क़ीक़ उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।"[4]

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "जिस ने इस के मोहरे (या'नी चौसर की गोट) उलट पुलट करते हुवे इन्तिज़ार किया कि क्या नतीजा निकलता है तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।"[5]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीम बिन अ़ब्दुल क़वी मुन्ज़री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जमहूर फ़ुक़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام का मौक़िफ़ येह है कि "चौसर खेलना ह़राम है।" और बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام

---

1 .....एक खेल का नाम है जो बादशाह अर्द शीर बिन बाबिक ने ईजाद किया था।

2 .....صحیح المسلم، کتاب الشعر، باب تحریم اللعب بالنردشیر، الحدیث: ۵۸۹۶، ص۱۰۷۸.

3 .....سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النهی عن اللعب بالنرد، الحدیث: ۴۹۳۹، ص۱۵۸۵.

4 .....موطأ امام مالک، کتاب الرؤیا، باب ماجاء فی النرد، الحدیث: ۱۸۳۶، ج۲، ص۴۴۱.

5 .....شعب الایمان للبیهقی، باب فی تحریم الملاعب والملاهی، الحدیث: ۶۴۹۹، ج۵، ص۲۳۷.

www.dawateislami.net

नक़्ल फ़रमाते हैं कि चौसर खेलने के ह़राम होने पर इजमाअ़ है। जब कि शत़रन्ज खेलने में इख़्तिलाफ़ है।

शत़रन्ज के जवाज़ के शराइत़

बा'ज़ फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने तीन शराइत़ के साथ शत़रन्ज खेलने को जाइज़ क़रार दिया है क्यूंकि इस के ज़रीए़ जंगी मुआ़मलात में काफ़ी मदद मिलती है। **पहली** शर्त़ येह है कि इस के सबब नमाज़े बा जमाअ़त (और किसी भी वाजिबे शरई) में ख़लल न आए। **दूसरी** येह कि इस में जूआ न हो और **तीसरी** येह है कि खेल के दौरान फ़ोह़श गोई से बचा जाए।

लिहाज़ा जब खेलने वाले ने इन शराइत़ में से किसी का ख़िलाफ़ किया तो ऐसे शख़्स की अ़दालत साक़ित़ और गवाही मर्दूद है। अक्सर फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मौक़िफ़ येह है कि "येह (या'नी शत़रन्ज खेलना) ह़राम है। इस का हुक्म चौसर के हुक्म जैसा है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के नज़दीक मकरूहे तन्ज़ीही है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने इसे जाइज़ क़रार दिया है और शत़रन्ज के ह़राम होने पर ज़ईफ़ अह़ादीस वारिद हैं।[1]

---

1 .....मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस का हुक्म बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "शत़रन्ज को अगर्चे बा'ज़ उ़लमा ने बा'ज़ रिवायात में चन्द शर्तों के साथ जाइज़ बताया है : (1).....बद कर (या'नी शर्त़ बांध कर) न हो (2).....नादिरन कभी कभी हो, आ़दत न डालें (3).....इस के सबब नमाज़े बा जमाअ़त ख़्वाह किसी वाजिबे शरई में ख़लल न आए (4).....इस पर क़समें न खाया करें (5).....फ़ोह़श न बकें। मगर तह़क़ीक़ येह कि **मुत़लक़न मन्अ़ है** और ह़क़ येह कि इन शर्तों का निबा हरगिज़ नहीं होता। ख़ुसूसन शर्ते दुवुम व सिवुम कि जब इस का चस्का पड़ जाता है ज़रूर मुदावमत करते हैं और ला अक़्ल (या'नी कम अज़ कम) वक़्ते नमाज़ में तंगी या जमाअ़त में ग़ैर ह़ाज़िरी बेशक होती है। जैसा कि तजरिबा इस पर शाहिद और बिलफ़र्ज़ ह़ज़ार में एक आध आदमी ऐसा निकले कि इन शराइत़ का पूरा लिहाज़ रखे तो नादिर पर हुक्म नहीं होता।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 76 रज़ा फ़ाऊन्डेशन, लाहौर)

www.dawateislami.net

(8).....ऐसे मवाक़ेअ़ पर खाना उ़मूमन माले ह़राम से होता है या खिलाने की जगह ग़सब शुदा होती है या बिछाए जाने वाले कपड़े ऐसे होते हैं जिन का इस्ति'माल ह़राम होता है और बिल ख़ुसूस जब ऐसी मह़फ़िल में शराब नोशी भी हो तो वहां जाना नाजाइज़ो ह़राम है अगर्चे येह ख़ुद शराब न पीता हो। क्यूंकि वहां फ़ुस्साक़ शरई तौ़र पर ह़राम अफ़्आ़ल का इर्तिकाब करते हैं और यूं ही ऐसे शख़्स की मह़फ़िल में जाना भी नाजाइज़ है जो बिग़ैर किसी शरई मजबूरी के रेशम और सोने-चांदी का लिबास पहनता हो।

(9).....ऐसी मह़ाफ़िल में मस्ख़रे होते हैं और फ़ोह़्श कलामी से लोगों को ख़ुश करते हैं। लिहाज़ा अगर किसी मह़फ़िल में ऐसा होता हो तो वहां जाना भी नाजाइज़ है और अगर वहां पर पहले से मौजूद हो तो अगर क़ुदरत रखता हो तो इस पर उन्हें रोकना वाजिब है वरना वहां से चला जाए और अगर मस्ख़रे ख़िलाफ़े शरअ़ गुफ़्तगू न करें तो गुनाह नहीं।

(10).....ऐसे मवाक़ेअ़ पर उ़मूमन बहुत ज़ियादा खाना ज़ाएअ़ किया जाता है येह बिग़ैर किसी ज़रूरत के माल को ज़ाएअ़ करना है (जो कि नाजाइज़ है)। और गाना गाने वालियों पर माल ख़र्च करना भी इसराफ़ में दाख़िल है।

इसराफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें

मुख़्तलिफ़ अह़वाल के ए'तिबार से इसराफ़ की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं। मसलन एक शख़्स के पास 5 हज़ार रूपे हैं। अहलो इ़याल का ख़र्च भी उस के ज़िम्मे है और इस रक़म के इ़लावा उस के पास कुछ भी नहीं। अगर उस ने सारी रक़म से वलीमा कर दिया तो ऐसा शख़्स इसराफ़ करने वाला कहलाएगा और उसे ऐसा करने से रोकना वाजिब है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

لَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ﴿۲۹﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा।*

www.dawateislami.net

शाने नुज़ूल

मज़कूरा आयते मुबारका का शाने नुज़ूल येह है कि मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में एक शख़्स ने अपना तमाम माल तक़्सीम कर दिया और अपने अहलो इ़याल के लिये कुछ बाक़ी न छोड़ा। जब उस से नफ़्क़े का मुत़ालबा किया गया तो वोह न दे सका।

एक और मक़ाम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْۤا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِؕ (پ۱۵، بنیاسرائیل:۲۶،۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और फ़ुज़ूल न उड़ा बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं।*

एक और जगह इरशाद फ़रमाया :

وَ الَّذِيْنَ اِذَاۤ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَ لَمْ يَقْتُرُوْا (پ۱۹، الفرقان:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें।*

उस क़र्ज़दार का क्या ह़ाल होगा जो अपना तमाम माल ख़र्च कर दे। पस जो इसराफ़ करते हुवे अपना सारा माल ख़र्च कर दे तो उसे रोकना ज़रूरी है और क़ाज़िये वक़्त पर वाजिब है कि वोह उसे ऐसा करने से रोके। हां ! जिस पर किसी का नफ़्क़ा वाजिब न हो और उस का तवक्कुल भी कामिल हो तो उस के लिये अपना तमाम माल कारे ख़ैर में ख़र्च कर देना जाइज़ है। लेकिन जिस पर किसी का नफ़्क़ा वाजिब हो या वोह तवक्कुल से आ़जिज़ हो तो उसे सारा माल ख़र्च कर देना जाइज़ नहीं। इन मिसालों को बत़ौरे तरग़ीब ज़िक्र किया गया है। अगर्चे आज कल ऐसे लोग बहुत कम हैं जो अपना सारा माल राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दें। इस मौक़अ़ की मुनासबत से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वाक़िआ़ ज़िक्र करना ज़रूरी है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काफ़ी हैं

एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लश्कर तय्यार करने के लिये माल ख़र्च करने

www.dawateislami.net

की तरग़ीब दिलाई तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना तमाम माल ला कर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश कर दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! अपने अहलो इ़याल के लिये क्या छोड़ कर आए हो ?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही काफ़ी है।"(1)

मस्अला :- अपने घर की तज़ईन व आराइश में तमाम माल ख़र्च कर देना इसराफ़ है और येह ह़राम है। जिस के पास माल काफ़ी मिक़्दार में हो उस का अपने घर की तज़ईन व आराइश में (उ़र्फ़ से ज़ियादा) ख़र्च करना मकरूह है और खाने और लिबास वग़ैरा का भी येही ह़ुक्म है।

आ़म बुराइयां

इल्मे शरई के ए'तिबार से मुसलमानों की दो अक़्साम हैं : (1).....आ़लिम (2).....जाहिल। जाहिल के लिये जहालत उ़ज़्र नहीं (बल्कि ब क़दरे ज़रूरत इल्म ह़ासिल करना फ़र्ज़ है) और तब्लीग़ न करने में आ़लिम का उ़ज़्र क़बूल नहीं। पस जिस के पास जिस क़दर इल्म है उस पर प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़ौल पर अ़मल करते हुवे इसे दूसरों तक पहुंचाना लाज़िम है। चुनान्चे, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को सर सब्ज़ो शादाब रखे जिस ने मेरी कोई बात सुनी और उसे अच्छी त़रह़ समझ कर महफ़ूज़ कर लिया। कितने ही फ़िक़्ह जानने वाले फ़िक़्हिय्या नहीं होते।"(2)

---

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الزکوۃ، باب الرخصۃ فی ذالک، الحدیث: ۱۶۷۸، ص ۱۳۴۸.

2 .....جامع الاحادیث للسیوطی، حرف النون مع الضاد، الحدیث: ۲۳۸۳۱، ج ۷، ص ۴۸۶.

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने इल्म को छुपाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे आग की लगाम डालेगा।"(1)

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : "जो इल्म हासिल करता है लेकिन उसे आगे नहीं पहुंचाता उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जो माल तो इकठ्ठा करता है मगर उसे ख़र्च नहीं करता।"(2)

हर मस्जिद में फ़िक़्ह के माहिर ऐसे आ़लिम का होना ज़रूरी है जो लोगों को दीन का इल्म सिखाए। इस में शहर, गाऊं और देहातों का एक ही हुक्म है। अगर किसी गाऊं में आ़लिम न हो तो अत़राफ़ के अहले इल्म पर लाज़िम है कि उस में उ़लमा को भेजें ताकि वोह लोगों को दीनी अह़काम सिखाएं, उन्हें **नेकी की दा'वत** दें और बुराई से मन्अ़ करें। अगर अहले इल्म ने येह काम किया तो अज्र पाएंगे वरना सब के सब गुनहगार होंगे। इस में किसी को ख़ास नहीं किया गया ख़्वाह आ़लिम हो या जाहिल। आ़लिम तो इस लिये गुनहगार होगा कि उस ने **नेकी की दा'वत** देने में सुस्ती की और जाहिल इस लिये कि उस ने इल्म ह़ासिल करने में कोताही की। पस हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वोह पहले अपनी इस्लाह़ करे और अपने नफ़्स को फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी और ममनूआ़त व मुह़र्रमात से बचने का पाबन्द करे। इस के बा'द अपने घर वालों की इस्लाह़ करे। जब इन से फ़ारिग़ हो जाए तो अपने पड़ोसियों की इस्लाह़ करे और अगर क़ुदरत रखता हो तो अपने मह़ल्ले वालों को मस्जिद में या ख़ुशी व फ़रह़त के मौक़ओं पर **नेकी की दा'वत** पेश करे। इस त़रह़ उस से गुनाह दूर हो जाएगा। अगर आस पास के अ़लाक़ों में जा कर **नेकी की दा'वत** देने की इस्तित़ाअ़त हो तो इस पर भी अ़मल करे। जब तक रूए ज़मीन पर एक भी ऐसा शख़्स मौजूद है जो फ़राइज़े दीनिय्या में

1 .....صحیح ابن حبان،کتاب العلم،باب الزجرعن کتبة المرء.....الخ،الحدیث:۹۶،ج۱،ص۱۵۴.

2 .....المعجم الاوسط،الحدیث:۶۸۹،ج۱،ص۲۰۴.

www.dawateislami.net

से किसी फ़र्ज़ से ना वाक़िफ़ है तो उस वक़्त तक उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام अपने अपने फ़र्ज़ से सुबुकदोश (या'नी बरियुज़्ज़िम्मा) नहीं होंगे।

इस तक़रीर से येह बात वाज़ेह़ हो गई कि क़ियामत के दिन हर मुसलमान से येह सुवाल किया जाएगा कि अपनी कुदरत के मुत़ाबिक़ लोगों को दीन की ता'लीमात दी थी या नहीं ? और जो शख़्स इस से आ़जिज़ है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस का उ़ज़्र क़बूल है। लेकिन येह उस वक़्त है जब वोह अपनी पूरी कोशिश और त़ाक़त ख़र्च कर दे। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन नाफ़ेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने घोड़े को समन्दर में डाल कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की थी : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर मुझे मा'लूम होता कि समन्दर पार कोई आबादी है तो मैं तेरी राह में जिहाद को जारी रखता।"

हुक्कमे वक़्त को वा'ज़ो नसीह़त

येह वोह लोग हैं जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों के मुआ़मलात की रिआ़यत और इन के मफ़ादात में मश्ग़ूल रहने पर मुक़र्रर फ़रमाता है। येह लोग मुकम्मल अ़क़्लो बसीरत के मालिक होते हैं और रिआ़या के सुकून पर अपने क़ीमती अवक़ात क़ुरबान कर देते हैं। हुक्काम अपने दुन्यवी उमूर में मश्ग़ूल होने की वज्ह से वक़्तन फ़ वक़्तन ऐसे शख़्स के मोह़ताज रहते हैं जो इन्हें **नेकी की दा'वत** दे और सल्त़नत की ह़िफ़ाज़त और मज़बूत़ी के लिये लोगों की ता'रीफ़ व मज़म्मत से आगाह करे। कोई भी सल्त़नत उस वक़्त तक सह़ीह़ त़ौर पर क़ाइम नहीं हो सकती जब तक उस की बुन्याद अ़द्लो इन्साफ़ पर न हो और ह़ाकिमे वक़्त से लोगों के छोटे बड़े मुआ़मलात पोशीदा न हों।

ह़ाकिमे वक़्त के नाइब पर लाज़िम है कि वोह ह़ाकिम और रिआ़या के माबैन मुआ़मलात में दियानत दार हो और इस से किसी चीज़ का लालच न रखता हो वरना उस की नसीह़त बे असर होगी। नीज़ ह़ाकिम को रिआ़या की सह़ीह़ सूरते ह़ाल से आगाह करता रहे और हरगिज़ धोका देही, ग़लत़ बयानी और चापलूसी से काम न ले। इसी त़रह़ उमूरे

www.dawateislami.net

सल्त़नत में ह़ाकिमे वक़्त की मुआ़वनत करता रहे क्यूंकि ह़ाकिम अकेला अपनी रिआ़या के ह़ालात से वाक़िफ़ नहीं हो सकता इस की वज्ह येह है कि लोगों के बेशुमार मुआ़मलात होते हैं और बसा अवक़ात सल्त़नत काफ़ी वसीअ़ होती है और नित नए मसाइल पैदा होते रहते हैं। बादशाह के हम नशीन पर लाज़िम है कि वोह नसीह़त करने वाला, अमानत दार, भलाई के कामों पर राहनुमाई करने वाला और उ़म्दा कारकर्दगी का मुज़ाहरा करने वाला हो। येह अच्छे हम नशीन की सिफ़ात हैं और अगर ह़ाकिम का नाइब मज़्कूरा अवसाफ़ का ह़ामिल न हो तो वोह बुरा हम नशीन और नुक़्सान देह होगा। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कुछ हुक्काम ऐसे होंगे जिन्हें उन के मुसाहि़बीन और ग़वाश (या'नी अ़य्यार) लोग रिआ़या के मुआ़मलात से अन्धेरे में रखेंगे, वोह झूट बोलेंगे और ज़ुल्म करेंगे। तो जो शख़्स उन के पास आए, उन के झूट के बा वुजूद उन की तस्दीक़ करे और ज़ुल्म पर उन की मदद करे उस का मुझ से कोई तअ़ल्लुक़ है न मुझे उस से कोई सरोकार और जो उन के पास न जाए और उन के झूट की वज्ह से उन की तस्दीक़ न करे और ज़ुल्म पर उन की मदद न करे मैं उस से हूं और वोह मुझ से है।"(1)

ग़वाश, ग़ाशियह की जम्अ़ है और ग़ाशियह से मुराद वोह शख़्स है जो चालाक व होशयार हो ख़्वाह भलाई में हो या बुराई में या किसी ना पसन्दीदा मुआ़मले में और ह़ाकिमे वक़्त से मिलने उस के पास आने वाले लोगों को भी ग़ाशियह कहा जाता है।

मफ़्हूमे ह़दीस

इस ह़दीसे पाक का मा'ना येह है कि "अ़न क़रीब कुछ उमरा ऐसे होंगे जिन के हम नशीन व मुसाहि़बीन झूटे, मुनाफ़िक़, ज़ालिम, बदतर

1 ......المسندللامام احمدبن حنبل،مسندابی سعیدخدری،الحدیث:۱۱۱۹۲،ج۴،ص۵۰،تقدُّمًاو تأخُّرًا.

www.dawateislami.net

और फ़ितना बाज़ होंगे और येह लोग ह़ाकिमे वक़्त और रिआ़या दोनों के लिये फ़ितने का बाइ़स होंगे।''

ह़ाकिम के हम नशीन पर येह भी ज़रूरी है कि वोह ज़ालिम के ख़िलाफ़ मज़लूम की मदद करे ताकि अज्रो सवाब का ज़ख़ीरा इकट्ठा करे न कि अपनी गर्दन पर गुनाहों का बोझ डाल ले। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो किसी मुसलमान को ऐसे मक़ाम पर ज़लील करे जहां उस की बे इ़ज़्ज़ती और आबरू रेज़ी की जा रही हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह ज़लीलो रुस्वा करेगा जहां वोह उस की मदद चाहता होगा और जो किसी मुसलमान की ऐसी जगह मदद करे जहां उस की इ़ज़्ज़त घटाई जा रही हो और उस की हुरमत का ख़याल न रखा जा रहा हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ऐसी जगह मदद फ़रमाएगा जहां उसे मददे इलाही दरकार होगी।''(1)

अब हुक्कामे वक़्त को वा'ज़ो नसीह़त करने के मुतअ़ल्लिक़ इ़ब्रत व फ़ाइदे के लिये चन्द वाक़िआ़त ज़िक्र किये जाते हैं। चुनान्चे,

सय्यिदुना अबू मूसा औ२ ज़ब्बह मेह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ब्बह बिन मेह़सन अ़नज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा में हम पर ह़ाकिम मुक़र्रर थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब ख़ुत़बा देते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करते, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ते और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दुआए ख़ैर किया करते। मुझे उन का येह त़रीक़ा अच्छा न लगा, मैं ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : ''आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

1 .....سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب الرجل یذب عن عرض اخیہ، الحدیث: ۴۸۸۴، ص ۱۵۸۱.

www.dawateislami.net

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के दोस्त (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) पर इतनी फ़ज़ीलत क्यूं देते हैं?" ऐसा उन्हों ने चन्द जुमुओं में किया था। मेरी इस बात पर उन्हों ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ एक मक्तूब लिखा जिस में मेरी येह शिकायत की गई थी कि ज़ब्बह बिन मेह़सन अ़नज़ी मेरे ख़ुत़्बे में मुदाख़लत करते हैं।

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मक्तूब का जवाब दिया और लिखा कि ज़ब्बह को मेरे पास भेज दो। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेज दिया। मैं ने वहां पहुंच कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दरवाज़ा ख़ट ख़टाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाहर तशरीफ़ लाए और पूछा : "तुम कौन हो?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ज़ब्बह बिन मेह़सन।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से फ़रमाया : "न तो तेरे लिये ख़ुश आमदीद है और न ही ख़ैर मक़्दमी।" मैं ने अ़र्ज़ की : "ख़ुश आमदीद तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है। और बाक़ी न तो मेरा अहल है और न ही कोई माल। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिला वज्ह मुझे मेरे शहर से क्यूं त़लब फ़रमाया?" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे गवर्नर (या'नी अबू मूसा अश्अ़री) और तेरे माबैन क्या झगड़ा हुवा?" मैं ने अ़र्ज़ की : "अभी बताता हूं। बात दर अस्ल येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब भी ख़ुत़्बा देते तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करते, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ते फिर

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दुआए ख़ैर करते। उन का येह फ़े'ल मुझे अच्छा न लगा तो मैं ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के दोस्त अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इतनी फ़ज़ीलत क्यूं देते हैं?" ऐसा उन्हों ने चन्द जुमुओं में किया था। फिर उन्हों ने ब ज़रीअ़ए मक्तूब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी शिकायत की।" ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ब्बह बिन मेह़सन अ़नज़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुवे पीछे हटने लगे और फ़रमा रहे थे कि तुम मुझ से ज़ियादा हिदायत याफ़्ता हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाए क्या तुम मुझे मुआ़फ़ कर दोगे?" मैं ने अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुआ़फ़ फ़रमाए।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुवे पीछे हटने लगे और येह फ़रमा रहे थे : "अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक दिन और एक रात उ़मर और आले उ़मर से बेहतर है। क्या मैं तुम्हें उन के उस दिन और रात के मुतअ़ल्लिक़ न बताऊं?" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्यूं नहीं!"

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रात तो येह है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार से दामन बचाते हुवे मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात में तशरीफ़ ले गए और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो लिये। कभी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे चलने लगते और कभी पीछे, कभी दाईं

www.dawateislami.net

जानिब तो कभी बाईं जानिब । इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! येह क्या है ? पहले तो तुम ने ऐसा कभी नहीं किया ।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब मुझे येह अन्देशा होता है कि कोई घात लगाए न बैठा हो तो मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे आ जाता हूं और जब येह फ़िक्र दामन गीर होती है कि कोई आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तआ़कुब में न आ रहा हो तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे हो जाता हूं और इसी वज्ह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाईं बाईं त़रफ़ से चलना शुरूअ़ कर देता हूं। क्यूंकि मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुश्मन की त़रफ़ से ख़ौफ़ है ।"

उस रात मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने पाउं की उंगलियों के पौरों पर चल रहे थे, यहां तक कि उंगलियां मुबारक सूज गईं । जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह ह़ालत देखी तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने कन्धों पर उठा कर तेज़ तेज़ चलने लगे । जब ग़ार के मुंह पर पहुंचे तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कन्धों से नीचे उतारा और अ़र्ज़ की : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! ग़ार में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले मैं दाख़िल होऊंगा क्यूंकि अगर इस में कोई मूज़ी जानवर वग़ैरा हो तो आप से पहले मुझे अज़िय्यत पहुंचाए । फिर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ग़ार में दाख़िल हुवे तो वहां उन्हें कोई ऐसी चीज़ नज़र न आई, फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने कन्धों पर उठाया और ग़ार में ले गए । ग़ार में एक ऐसा सूराख़ था कि जिस में उ़मूमन सांप और बिच्छू वग़ैरा का ठिकाना होता है तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपना पाउं उस सूराख़ पर रख दिया इस ख़ौफ़ से कि कहीं कोई मूज़ी

www.dawateislami.net

जानवर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़रर न पहुंचाए । **येह अमीरुल मोमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की रात का वाक़िआ़ है ।**[1]

और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का दिन येह है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ज़ाहिरन) इस दुन्या से पर्दा फ़रमा गए तो बा'ज़ नौ मुस्लिम अ़रब (مَعَاذَ الله) मुर्तद्द हो गए और कहने लगे : "हम नमाज़ तो पढ़ेंगे मगर ज़कात अदा नहीं करेंगे ।" तो मैं अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा ! और मुसलसल अ़र्ज़ करता रहा : "ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! लोगों के साथ नर्मी कीजिये । तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने मुझ से फ़रमाया : "क्या हुवा ! ज़मानए जाहिलिय्यत में तो बड़े सख़्त थे और इस्लाम में नर्म हो गए हो ? किस बिना पर मैं उन के साथ नर्मी करूं ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या से पर्दा फ़रमा गए, सिलसिलए वह़ी ख़त्म हो गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर इन लोगों ने मुझे (ज़कात में) वोह रस्सी देने से भी इन्कार किया जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिया करते थे तो मैं इन से जिहाद करूंगा ।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "फिर हम ने मुन्किरीने ज़कात से जिहाद किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह बेहतरीन हुक्मरान थे । **येह उन के दिन का वाक़िआ़ है ।**"

फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की त़रफ़ मक्तूब रवाना फ़रमाया और उन्हें ऐसा करने पर मलामत फ़रमाई ।"

1 .....دلائل النبوة للبيهقي،جماع ابواب المبعث،باب خروج النبي.....الخ،ج۲،ص۴۷۷.

www.dawateislami.net

इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और ख़लीफ़ा मन्सूर का वाक़िआ़

अहले शाम के इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने मेरे पास पैग़ाम भेजा। उस वक़्त मैं साह़िल पर था। जब मैं उस के पास आया और क़रीब पहुंच कर सलाम किया तो उस ने जवाब दिया और मुझे अपने पास बिठा लिया। फिर मुझ से कहने लगा : "आने में इतनी देर क्यूं की?" मैं ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा! तुझे मुझ से भला क्या काम है?" उस ने कहा : "मैं आप से कुछ सीखना चाहता हूं।" मैं ने कहा : "ऐ ख़लीफ़ा! जो कुछ मैं बयान करूं उसे ग़ौर से सुनना।" ख़लीफ़ा मन्सूर ने कहा : "मैं कैसे तवज्जोह न दूंगा? ह़ालांकि मैं खुद सुवाल कर रहा हूं और इसी के लिये आप की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा हूं और आप को अ़र्ज़ की है।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : "मुझे इस बात का ख़ौफ़ है कि तुम सुनोगे मगर अ़मल न करोगे।" येह सुन कर (उस का वज़ीर) रबीअ़ मुझ पर चीख़ा और अपना हाथ तल्वार की त़रफ़ बढ़ाया तो अबू जा'फ़र मन्सूर ने उसे झिड़क दिया और कहा : "येह मह़फ़िले सवाब है न कि मह़फ़िले इ़क़ाब।" इस से मेरा दिल खुश हो गया और मैं ने इत़्मीनान के साथ अपना कलाम शुरूअ़ करते हुवे कहा : "ऐ ख़लीफ़ा! हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस बन्दे के पास उस के दीन के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कोई नसीह़त आए तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत है जो उस की त़रफ़ भेजी गई है। अगर वोह शुक्र के साथ क़बूल कर ले तो ठीक वरना वोह उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत है ताकि उस के गुनाहों में इज़ाफ़ा हो और उस के सबब उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी ज़ियादा हो।"(1)

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة اولی الامر،فصل فی نصیحة الولاة ووعظهم، الحدیث:۷۴۱۰،ج۶،ص۲۹.

www.dawateislami.net

ऐ ख़लीफ़ा ! हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया : "जो हाकिम इस हाल में मरा कि अपनी रिआ़या के साथ धोका करने वाला हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है।"(1)

एक रिवायत में इस त़रह़ है : "जिस इमाम ने अपनी रिआ़या के साथ दग़ाबाज़ी करते हुवे रात गुज़ारी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत ह़राम फ़रमा देता है।"(2)

ऐ ख़लीफ़ा ! जिस ने ह़क़ को ना पसन्द किया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अच्छा नहीं जाना बेशक वोह वाज़ेह़ ह़क़ है, उसी ने ही तेरे लिये तेरी रिआ़या के दिलों को नर्म कर दिया था जब उस ने तुझे उन के मुआ़मलात पर ह़ाकिम बनाया था क्यूंकि तुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़राबत ह़ासिल है और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत पर मेहरबान व रह़ीम हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हाथ से उन की ग़म ख़्वारी करते, लोग भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ाबिले ता'रीफ़ हैं। तुम्हारे लाइक़ येही है कि अपनी रिआ़या में अ़द्लो इन्साफ़ और ह़क़ के साथ क़ाइम रहो। उन की पर्दापोशी करो। उन पर अपने दरवाज़े बन्द न करो और उन के सामने कोई रुकावट न बनाओ। अगर उन्हें कोई ने'मत मिले तो ख़ुशी का इज़्हार करो और अगर कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो ग़मगीन हो जाओ।

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة اولی الامر،فصل فی نصیحة الولاة ووعظهم، الحدیث: ۷۴۱۱، ج۶، ص۳۰،"مات" بدله "بات".

2 ......شعب الایمان للبیهقی، باب فی طاعة اولی الامر،فصل فی نصیحة الولاة ووعظهم، الحدیث: ۷۴۱۱، ج۶، ص۳۰،"مات" بدله "بات".

www.dawateislami.net

ऐ ख़लीफ़ा ! पहले तुम अपनी ज़ात में मश्ग़ूल थे और दीगर उन लोगों से बे परवाह थे जिन के सुर्ख़ व सियाह और मुस्लिम व काफ़िर अब तुम्हारी मिल्किय्यत में हैं और हर एक के लिये अ़द्लो इन्साफ़ का एक हिस्सा तुम पर लाज़िम है। उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब इन में से गुरौह दर गुरौह लोग आएंगे और हर एक इस मुसीबत की शिकायत करेगा जिस में तुम ने उसे मुब्तला किया होगा। और हर उस ज़ुल्म की शिकायत करेगा जो तुम ने उस पर किया होगा।

ऐ ख़लीफ़ा ! एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में एक टहनी थी जिस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिस्वाक करते और मुनाफ़िक़ीन को डराते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह टहनी कैसी है जिस से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के दिल टूट गए और रो'ब से भर गए?" तो उस का क्या ह़ाल होगा जिस ने लोगों के पर्दे चाक किये, उन के ख़ून बहाए, उन के घरों को तबाहो बरबाद किया, उन्हें जिला वत़न कर दिया और उस के ख़ौफ़ ने लोगों को उस से दूर कर दिया?

ऐ ख़लीफ़ा ! एक मरतबा सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आ'राबी से ख़राश पहुंचने पर उसे बुलाया (और उस से क़िसास लिया) जब कि उस ने जान बूझ कर ख़राश नहीं लगाई थी तो जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब्बार व मुतकब्बिर बना कर नहीं भेजा।" तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस आ'राबी को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "मुझ से क़िसास ले लो।" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! मैं ने मुआ़फ़ किया और मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता अगर्चे

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे हलाक फ़रमा दें तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के लिये दुआए ख़ैर फ़रमाई।"(1)

ऐ ख़लीफ़ा ! अपने नफ़्स को क़ाबू में रख और इसे नेकी की आ़दत डाल। इस के लिये अपने रब عَزَّوَجَلَّ से अमान त़लब कर और उस जन्नत में रग़बत रख जिस की चौड़ाई आस्मानों और ज़मीन के बराबर है जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जन्नत में तुम्हारी कमान जितनी जगह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।"(2)

ऐ ख़लीफ़ा ! क्या तुम इस आयते मुबारका :

مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ (پ۱۵، الکھف:۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस नविश्ता को क्या हुवा न उस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो।*

की वोह तफ़्सीर जानते हो जो तुम्हारे जद्दे अमजद (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने बयान की और इरशाद फ़रमाया : "इस आयत में मज़्कूर लफ़्ज़े "صغيرة" से मुराद मुस्कुराना और "كبيرة" से मुराद हंसना है तो उन आ'माल का क्या ह़ाल होगा जिन को तुम्हारे हाथों ने कमाया और ज़बानों ने जम्अ़ किया ?"

ऐ ख़लीफ़ा ! मुझे येह बात पहुंची है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर नह्रे फ़ुरात के किनारे कोई बकरी का बच्चा भी भूका प्यासा मर गया तो मुझे ख़ौफ़ है कि उस के मुतअ़ल्लिक़ मुझ से पूछा जाएगा।" तो उस का क्या ह़ाल होगा जो तेरे अ़द्लो इन्साफ़ से महरूम रहा ह़ालांकि वोह तेरी निगहबानी में था।

---

1 .....المستدرک للحاکم، کتاب الرقاق، باب دعاالنبی اعرابیًّاالی.....الخ، الحدیث:۸۰۱۳، ج۵، ص۴۷۱.

2 .....صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب صفة الجنةوالنار، الحدیث۶۵۶۸، ص۵۵۰، "لقید"بدله"لقاب".

www.dawateislami.net

ऐ ख़लीफ़ा ! क्या इस आयते करीमा :

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ (پ۲۳،ص:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ दावूद ! बेशक हम ने तुझे ज़मीन में नाइब किया तू लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी।

की तफ़्सीर जानते हो जो तुम्हारे जद्दे अमजद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने की है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़बूर शरीफ़ में इरशाद फ़रमाया : "ऐ दावूद ! जब दो झगड़ा करने वाले तेरे सामने बैठें और किसी एक की त़रफ़ तेरा दिल माइल हो तो हरगिज़ उस के ह़क़ में फ़ैसला करने की ख़्वाहिश न करना कि वोह दूसरे के ख़िलाफ़ कामयाब हो जाए। अगर ऐसा किया तो मैं तुझे अपनी त़रफ़ से अ़त़ाकर्दा नबुव्वत व ख़िलाफ़त के दरजात में से तेरा एक दरजा कम कर दूंगा। फिर उस दरजे में तेरी कोई फ़ज़ीलत न होगी। ऐ दावूद ! मैं ने अपने रसूलों को अपने बन्दों पर इस त़रह़ निगहबान मुक़र्रर फ़रमाया है जिस त़रह़ ऊंटों का चरवाहा उन की देख भाल करता, उन के मुआ़मलात से वाक़िफ़ होता और एक तदबीर के तह़्त उन पर नर्मी करता, शिकस्ता ह़ाल की मदद करता और लाग़र ऊंटों को घास पानी की त़रफ़ ले जाता है।

ऐ ख़लीफ़ा ! तू ऐसी आज़माइश में डाल दिया गया है कि अगर इसे ज़मीनो आसमान और पहाड़ों पर पेश किया जाता तो वोह भी इसे उठाने से इन्कार कर देते और इस से ख़ौफ़ज़दा हो जाते। ऐ ख़लीफ़ा ! अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक अन्सारी को ज़कात वुसूल करने पर आ़मिल मुक़र्रर फ़रमाया। चन्द दिन बा'द उसे घर पर देखा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम अपने काम पर क्यूं नहीं गए ? क्या तुझे मा'लूम नहीं कि तेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह

www.dawateislami.net

में जिहाद करने वाले कि मिस्ल अज्र है?" अन्सारी ने अ़र्ज़ की : "ऐसी बात नहीं।" इरशाद फ़रमाया : "तो क्यूं नहीं गए।" अन्सारी ने अ़र्ज़ की : मुझे येह ह़दीस पहुंची है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स लोगों के मुआ़मलात में से किसी मुआ़मले पर वाली बना तो क़ियामत के दिन उसे इस ह़ालत में लाया जाएगा कि उस का हाथ उस की गर्दन के साथ बन्धा हुवा होगा और उसे उस का अ़द्लो इन्साफ़ ही खोल सकेगा।"(1)

ऐ ख़लीफ़ा ! बेशक सख़्त तरीन मुआ़मला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये उस के ह़क़ को क़ाइम करना है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त, तक़्वा में है। जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त के साथ इ़ज़्ज़त त़लब की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमा कर इ़ज़्ज़त बख़्शेगा और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी के साथ इ़ज़्ज़त त़लब की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लीलो रुस्वा करेगा। येह मेरी त़रफ़ से तुझे नसीह़त है। "وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : फिर मैं वापसी के लिये उठा तो ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने पूछा : "कहां?" मैं ने कहा : "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी अवलाद और वत़न की त़रफ़, अगर इजाज़त हो तो।" ख़लीफ़ा ने कहा : "मैं ने आप को इजाज़त दी और इस नसीह़त पर आप का शुक्रिय्या अदा करता और इसे क़बूल करता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही नेकी की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाने वाला और मददगार है। मैं उसी से मदद त़लब करता और उसी पर तवक्कुल करता हूं। वोह मुझे काफ़ी है और वोह सब से अच्छा कारसाज़ है। मुझे इसी त़रह़ की नसीह़त करते रहना क्यूंकि आप की बात क़बूल की जाने वाली है और आप नसीह़त में मुख़्लिस हैं।" मैं ने कहा : "اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ऐसा ही करूंगा।"

---

1 ......مجمع الزوائد، كتاب الخلافة، باب فى من ولى شيئا، الحديث: ٩٠٣٥، ج٥، ص ٣٧٠، مفهومًا.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुस्अ़ब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़लीफ़ा ने उन्हें कुछ माल देने का हुक्म दिया ताकि जाते हुवे आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को काम आए । मगर ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसे क़बूल न किया और इरशाद फ़रमाया : "मैं इस से बे नियाज़ हूं, मैं अपनी नसीह़त दुन्यवी मालो मताअ़ के इ़वज़ नहीं बेचना चाहता ।" मन्सूर ने उन की रविश को जान लिया और उन पर इस मुआ़मले में क़ुदरत न पा सका ।[1]

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के सिलसिले में हमारे उ़लमाए ह़क़ की सीरत येह है कि वोह बादशाहों के रो'ब व दबदबे की भी परवाह न करते थे क्यूंकि उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम पर तवक्कुल किया था कि वोही उन का मुह़ाफ़िज़ है और वोह इस हुक्मे इलाही पर राज़ी थे कि वोह उन्हें शहादत से नवाज़ दे । जब उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपनी निय्यतों को ख़ालिस कर लिया तो उन के कलाम में ऐसी तासीर पैदा हो गई कि सख़्त दिलों को भी नर्म कर दिया । आज के दौर में तो बा'ज़ अहले इ़ल्म की ज़बानें लालच की ज़ंजीरों में क़ैद हो गईं और उन्हों ने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली । अगर कलाम करते भी हैं तो उन के क़ौलो फ़े'ल में मुवाफ़क़त नहीं होती । इसी वज्ह से वोह कामयाब भी नहीं होते । बादशाहों में बिगाड़ पैदा होने की वज्ह से रिआ़या बिगड़ जाती है और बादशाहों में बिगाड़ अहले इ़ल्म के फ़साद की वज्ह से होता है और अहले इ़ल्म में फ़साद मालो मन्सब की मह़ब्बत की वज्ह से पैदा होता है और जिन पर दुन्या की मह़ब्बत ग़ालिब आ जाए वोह बिगड़े हुवे आ़म लोगों को भी **नेकी की दा'वत** देने और बुराई से मन्अ़ करने पर क़ादिर नहीं होते तो फिर हुकमा व उमरा को दा'वत कैसे देंगे ?[2]

---

1 .....حلية الاولياء وطبقات الاصفياء، ذكر طبقة من تابعي اهل الشام،ابوعمرو الاوزاعي، الحديث:۸۱۲۰،ج۶،ص۱۴۶تا۱۱

2 .....احياء علوم الدين،كتاب الامربالمعروف والنهي عن المنكر،باب الرابع في امر.....الخ، ج۲،ص۴۳۷.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिद शरीफ़ जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی पर रह़्म फ़रमाए, इन्हों ने क्या ख़ूब फ़रमाया है :

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْعِلْمِ صَانُوْهُ صَانَهُمْ وَلَوْعَظَّمُوْهُ فِی الْقُلُوْبِ لَعَظَّمَا

وَلٰكِنْ اَهَانُوْهُ فَهَانُوْا وَلَطَّخُوْا مُحَيَّاهُ بِالْاَطْمَاعِ حَتّٰى تَجَهَّمَا

तर्जमा : अगर अहले इ़ल्म, इ़ल्म की हिफ़ाज़त करते तो येह उन की हिफ़ाज़त करता और अगर वोह दिल से इस की ता'ज़ीम करते तो येह भी इन को इ़ज़्ज़त देता। लेकिन उन्हों ने इस की बे क़द्री व तौहीन की तो ख़ुद अपनी अहम्मिय्यत खो बैठे और लालच से इस का चेहरा आलूदा कर दिया यहां तक कि इ़ल्म ने उन से रू गर्दानी कर ली।

وَصَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن

6 अफ़राद पर ला'नत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "6 त़रह़ के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ क़बूल है। 6 अश्ख़ास येह हैं : (1) किताबुल्लाह में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक़्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर ज़ुल्म के साथ तसल्लुत़ करने वाला कि उस शख़्स को इ़ज़्ज़त देता है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उसे ज़लील करता है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाई (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़रम (या'नी ह़रमे मक्का) को ह़लाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की ह़ुरमत जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला।"

(صحیح ابن حبان،الحدیث:۵۷۱۹،ج۷،ص۵۰۱)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

نمبرشمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآنِ مجید	کلامِ باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلیشرزلاہور
2	ترجمہ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلیشرزلاہور
3	تفسیرخزائن العرفان	سید محمدنعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلیشرزلاہور
4	تفسیرنورالعرفان	حکیم الامت مفتی احمد یارخان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیربھائی کمپنی لاہور
5	صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالسلام ریاض
6	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارالسلام ریاض
7	سننِ ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دارالسلام ریاض
8	جامع ترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالسلام ریاض
9	سننِ نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالسلام ریاض
10	سننِ ابنِ ماجہ	امام محمد بن یزیدقزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالسلام ریاض
11	الموطأ	امام مالک بن انس رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۷۹ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
12	المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
13	المستدرک	امام محمد بن عبداللّٰہ حاکم رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
14	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم منذری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۷ھ
15	صحیح ابنِ حبان	حافظ محمد بن حبان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۷ھ
16	شعب الایمان	امام احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
17	الجامع الصغیر	امام حافظ جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ
18	المعجم الصغیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۰۳ھ
19	المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
20	دلائل النبوۃ	حافظ احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
21	احیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن احمد غزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارصادربیروت ۲۰۰۰
22	جامع الاحادیث	امام حافظ جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
23	مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابوبکر ھیثمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۸۰۷ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۰ھ
24	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد اضاخان علیہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
25	بہارِ شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

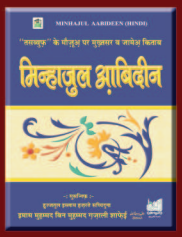

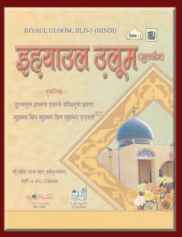

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात मग़रिब की नमाज़ के बा 'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- **देहली** :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- **अह़मदाबाद** :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- **मुम्बई** :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- **हैदराबाद** :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- **नागपुर** :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526
- **अजमेर** :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586
- **हुबली** :- ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092
- **बनारस** :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यू.पी, फ़ोन : 09369023101